Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

3rd July 2018

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

हरिद्वार

उद्घाटन समारोह : 6 जुलाई, 2018, सायं 4 बजे

उद्घाटनकर्ता : **योग गुरु स्वामी रामदेव जी,** पतंजलि योगपीठ

मुख्यअतिथि : **महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी,** राज्यपाल, मेघालय

अति विशिष्ट अतिथि : **श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी,** मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

विशिष्ट अतिथि : **चौ. वीरेन्द्र सिंह जी,** केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार

: **स्वामी सुमेधानन्द जी,** संसद सदस्य, सीकर, राजस्थान

: **श्री मदन कौशिक जी,** मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार

: **श्री विपुल गोयल जी,** मंत्री, हरियाणा सरकार

अध्यक्षता : **स्वामी प्रणवानन्द जी,** सम्मेलन अध्यक्ष

स्वागत भाषण : **स्वामी यतीश्वरानन्द जी,** स्वागताध्यक्ष सम्मेलन

प्रस्तावना : **स्वामी आर्यवेश जी,** प्रधान, सार्वदेशिक सभा

संयोजक : **प्रो. विट्ठलराव आर्य जी,** मंत्री/संयोजक, सार्वदेशिक सभा

सान्निध्य

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आचार्या सूर्या देवी जी, आचार्या नन्दिता देवी जी, आचार्या प्रियंवदा जी, आचार्या सुकामा जी, आचार्या सुमेधा जी, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी, आचार्य सोमदेव शास्त्री जी, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री जी (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली), डॉ. महावीर मीमांसक जी, श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, श्री रघुवीर वेदालंकार जी।

श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

स्वामी रामदेव जी
पतंजलि योगपीठ

गुरुकुलों को केन्द्रीकृत कर

वैदिक संस्कृत सम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन, वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प सम्मेलन, यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम् सम्मेलन, वेद विज्ञान एवं संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है।

आर्य जगत् के समस्त संन्यासीगण, आचार्या एवं आचार्यगणों और गणमान्य माहनुभावों की उपस्थिति में यह सम्मेलन गुरुकुल की जननी गुरुकुल कांगड़ी परिसर में आयोजित होगा। भारी संख्या में पधार कर सम्मेलन को सफल बनायें।

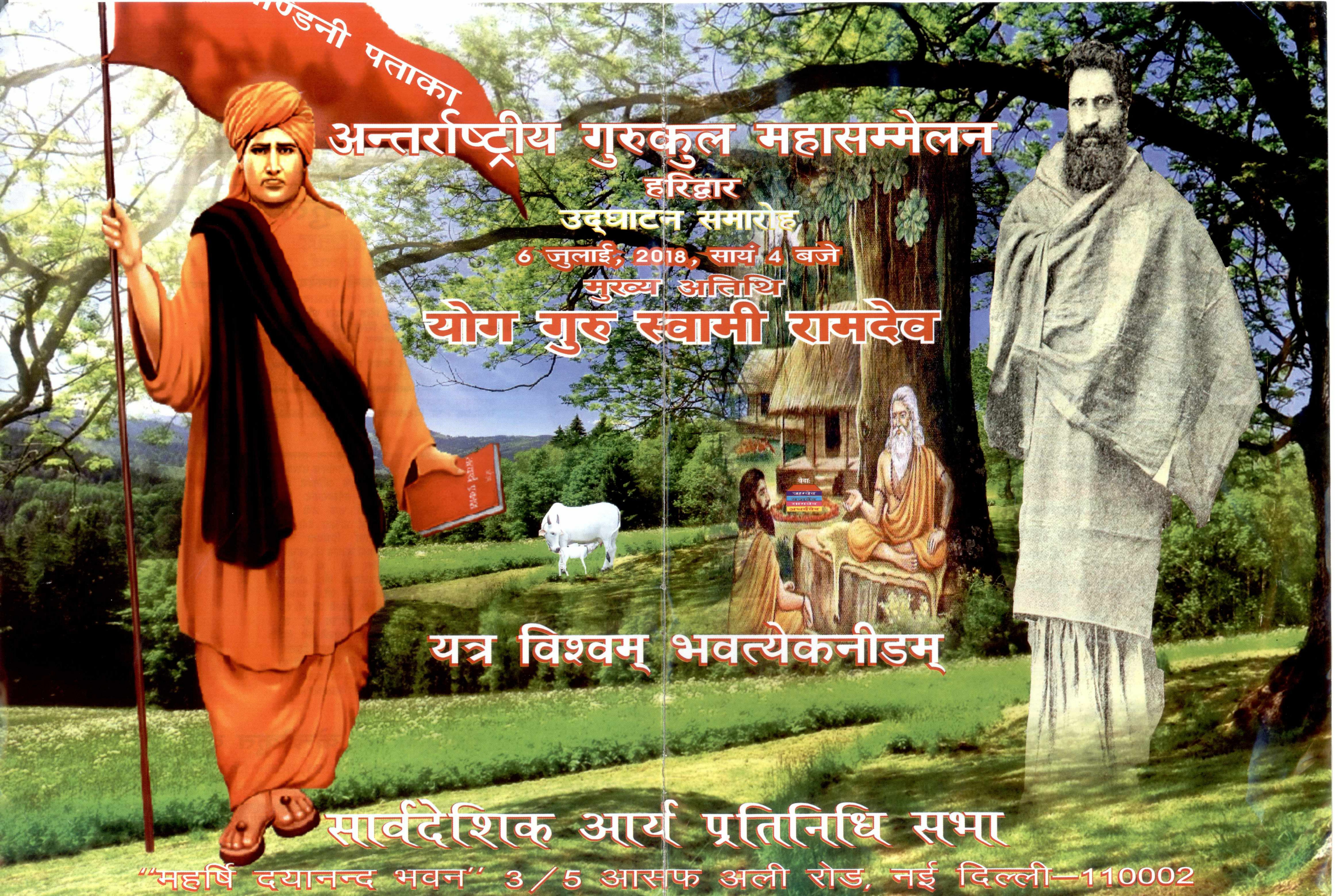

ण्डनी पताका
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन
हरिद्वार
उद्घाटन समारोह
6 जुलाई, 2018, सायं 4 बजे
मुख्य अतिथि
योग गुरु स्वामी रामदेव
यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

निमन्त्रण

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

अषाढ़ कृष्ण अष्टमी, नवमी, दशमी, सम्वत्-2075

6, 7, 8 जुलाई (शुक्रवार, शनिवार, रविवार), 2018

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी, विद्यालय परिसर
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

निवेदक

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
सम्मेलन-अध्यक्ष

स्वामी यतीश्वरानन्द
स्वागताध्यक्ष

स्वामी आर्यवेश
सभा प्रधान

पं. माया प्रकाश त्यागी
सभा कोषाध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा मंत्री

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :-011-23274771, 23260985

e-mail : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in, aryavesh@gmail.com, acharyavithal@gmail.com

6 जुलाई, 2018

चतुर्वेद शतक महायज्ञ

समय : प्रातः 9 बजे
ब्रह्मा : आचार्य सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)
संयोजक : डॉ. रविन्द्र कुमार (हरिद्वार)
सह–संयोजक : श्री शिवदेव आर्य गुरुकुल पौंधा, देहरादून
वेदपाठ : गुरुकुल पौंधा, कन्या गुरुकुल द्रोण स्थली, देहरादून
व्यवस्थापक : श्री विजेन्द्र शास्त्री, प्रधानाचार्य गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
भजन : पं. नरेश दत्त आर्य, बिजनौर
प्रवचन : स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी धर्ममुनि, स्वामी यज्ञमुनि
मुख्य यजमान : श्री अशोक वर्मा, पूर्व चीफ इंजीनियर, देहरादून
: श्री शत्रुघन मौर्य, देहरादून, श्री महेन्द्र सिंह चौहान (देहरादून)
: श्री हाकम सिंह आर्य, हरिद्वार, श्री दिनेश कुमार पाण्डेय, प्रधान वानप्रस्थ आश्रम

ध्वजारोहण

समय : प्रातः 11 बजे
मुख्य अतिथि : डॉ. धीरज सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
: पं. माया प्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
विशिष्ट अतिथि : श्री सुखबीर सिंह वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड
: श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, छाया प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड
: श्री रमेन्द्र गुप्ता, मंत्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
: डा. लक्ष्मण सिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना
संयोजक : श्री भंवर लाल आर्य, अधिष्ठाता, आर्य वीरदल राजस्थान
सह–संयोजक : श्री सौरभ आर्य, श्री सोनू आर्य, श्री रवि शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र आर्य

गुरुकुल परिचय सम्मेलन

समय : प्रातः 11.30 से 2.30 बजे तक
अध्यक्षता : स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, प्रभात आश्रम, मेरठ
मुख्य अतिथि : श्री वेद प्रकाश गुप्ता, देहरादून
विशिष्ट अतिथि : श्री इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, देहरादून
: श्री श्रीकान्त वर्मा, हरिद्वार
: श्री आनन्द कुमार आर्य (टांडा) उत्तर प्रदेश
: श्री ध्रुव कुमार मित्तल, करतारपुर (पंजाब)
: श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव, खण्डवा, मध्य प्रदेश
संयोजक : श्री रामपाल शास्त्री, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली
सह–संयोजक : श्री धर्मवीर (गुरुकुल प्रभात आश्रम), श्री यशवीर आर्य, गुरुकुल लाढ़ौत,
: श्री मनुदेव बागमी (गुरुकुल आमसेना), आचार्या शारदा (उड़ीसा)
: श्री धनेश्वर बेहरा–राऊरकेला, श्री राजमल जाका–गुरुकुल धीरणवास हिसार
विशेष सान्निध्य : आचार्या सुकामा, कन्या गुरुकुल रुड़की (रोहतक), आचार्या अन्नपूर्णा, कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली देहरादून, आचार्या पवित्रा विद्यालंकार, कन्या गुरुकुल सासनी, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, आचार्या राजन मान, कन्या गुरुकुल लोवा कलां, आचार्या पुष्पा, कन्या गुरुकुल हजारीबाग, आचार्या सूर्यादेवी, कन्या गुरुकुल शिवगंज, आचार्य कोमल, गुरुकुल कोसरंगी, आचार्य जयकुमार, गुरुकुल मंझावली, आचार्य नागेन्द्र, गुरुकुल अयोध्या, आचार्य जीवन सिंह, साधु आश्रम अलीगढ़, आचार्य जयेन्द्र शास्त्री, गुरुकुल नोएडा, आचार्य उदयन आर्य, गुरुकुल करतारपुर, आचार्य ओम प्रकाश, आबू पर्वत, श्री सोमवीर जी शास्त्री (प्रबंधक आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली), आचार्य सुधांशु (श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ा खुर्द दिल्ली), आचार्य हनुमत प्रसाद (गुरुकुल टटेसर जौन्ती दिल्ली), आचार्य ऋषिपाल (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद हरियाणा), आचार्य विजयपाल (गुरुकुल झज्जर हरियाणा), आचार्य हरिनिवास (आर्ष गुरुकुल भादस मेवात हरियाणा), आचार्य हरिदत्त उपाध्याय (गुरुकुल भैय्यापुर लाढौत रोहतक हरियाणा), आचार्या निशा (कन्या गुरुकुल हसनपुर पलवल हरियाणा), डॉ. रविन्द्र आर्य (संचालक, भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात रेवाड़ी, हरियाणा), श्री कुलदीप आर्य (आर्ष कन्या गुरुकुल राजुणा कैथल हरियाणा), आचार्य राजेन्द्र (गुरुकुल कालवा, जीन्द हरियाणा), आचार्या मन्द्र कला (कन्या गुरुकुल महाविद्यालय पचगांव भिवानी हरियाणा), आचार्य (गुरुकुल धीरणवास हिसार हरियाणा), आचार्य रामस्वरूप जी (गुरुकुल आर्य नगर हिसार हरियाणा), आचार्य शम्भू मित्र जी (गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक हरियाणा), स्वामी धर्ममुनी दुग्धाहारी (आत्म शुद्धि आश्रम गुरुकुल बहादुरगढ़ झज्जर हरियाणा), आचार्य जी (गुरुकुल किशन गढ़ घासेड़ा रेवाड़ी हरियाणा), प्रिंसिपल सुनीता (वैदिक कन्या गुरुकुल एकलाकलां जीन्द हरियाणा), श्री धर्मवीर सिंह (प्रधान, कन्या गुरुकुल पाढ़ा करनाल (हरियाणा), सुश्री मधुलिका आर्या (आचार्या श्रुति धाम कन्या गुरुकुल भड़ताना जीन्द हरियाणा), श्रीमती मधुरलता मान (प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल मोर माजरा करनाल, हरियाणा), आचार्य जी (गुरुकुल मदपुरी पलवल हरियाणा), स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (आचार्य श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल देवालय पोमत अलीगढ़ उत्तर प्रदेश), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (गुरुकुल ततारपुर उत्तर प्रदेश), आचार्या डॉ. सुमेधा (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा अमरोहा उत्तर प्रदेश), आचार्य नागेन्द्र (गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या उत्तर प्रदेश), आचार्या डॉ. नन्दिता (कन्या गुरुकुल तुलसीपुर मोती झील, वाराणसी, उत्तर प्रदेश), स्वामी धर्मेश्वरानन्द, (गुरुकुल पुष्पावती पूठ गाजियाबाद उत्तर प्रदेश), आचार्य जी (गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ उत्तर प्रदेश), आचार्या रश्मि (आर्ष कन्या गुरुकुल नारंगपुर किला परिक्षित गढ़ मेरठ), आचार्य स्वामी चन्द्रवेश (प्रधान, शम्भूदयाल दयानंद वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद), स्वामी विश्वानन्द (गुरुकुल दलौता मथुरा उत्तर प्रदेश), आचार्या जी (आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम सौरखा नोएडा उत्तर प्रदेश), आचार्या गायत्री (मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी), आचार्य विनोद (गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा बागपत उत्तर प्रदेश), आचार्या मनू आर्या (गार्गी कन्या गुरुकुल भैय्या बामरु अलीगढ़ उत्तर प्रदेश), आचार्य इन्द्रपाल (गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश), आचार्य (गुरुकुल सिकन्दराबाद दनकौर बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश), आचार्या धारणा (गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश), डॉ. शिवदत्त पाण्डेय (वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम धनपति गंज सुलतानपुर उत्तर प्रदेश), आचार्य डॉ. धनंजय (श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा देहरादून), आचार्य विश्वपाल जयन्त (गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड), गुरुकुल चित्तौड़गढ़, आचार्य बुद्धदेव (गुरुकुल योगाश्रम) श्री नरसिंह नाथ (पाईकमाल बरगढ़ उड़ीसा), आचार्या शारदा, (आर्ष कन्या गुरुकुल देवनगर घुचापाली बरगढ़ उड़ीसा), आचार्य जी, गुरुकुल आमसेना एवं आचार्या जी कन्या गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा), आचार्य बृहस्पति (गुरुकुल नवप्रभात आश्रम पदमपुर नौआपाली, उड़ीसा), आचार्य विनय वैदिक, आदिम गुरुकुल आश्रम कुन्दुली, कोरपुट (उड़ीसा), आचार्य सत्यसिन्धु (गुरुकुल होशंगाबाद, मध्य प्रदेश), आचार्य सत्यप्रिय (गुरुकुल विद्यापीठ जमानी इटारसी, मध्य प्रदेश), आचार्य हीरा प्रसाद शास्त्री, (पं. लेखराम आर्य गुरुकुल वेलीनेझी पालक्कड़, केरल)

उद्घाटन सम्मेलन

समय : सायं 4 बजे से
मुख्य अतिथि : श्री गंगा प्रसाद जी, महामहिम राज्यपाल, मेघालय
उद्घाटन : विश्वविख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज
अतिविशिष्ट अतिथि : श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी, मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड सरकार
विशिष्ट अतिथि : स्वामी सुमेधानन्द जी, सांसद सीकर, राजस्थान
: श्री मदन कौशिक जी, मंत्री उत्तराखण्ड सरकार
: श्री आदेश चौहान, विधायक
अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली
स्वागत भाषण : स्वामी यतीश्वरानन्द जी, विधायक हरिद्वार ग्रामीण
संयोजक : प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, मंत्री, सार्वदेशिक सभा
सान्निध्य : स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री जी पूर्व विधान सभा अध्यक्ष दिल्ली, डॉ. महावीर मीमांसक जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री जी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी, आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा जी, आचार्या नन्दिता देवी जी, आचार्या सुमेधा जी, आचार्या सुकामा जी, आचार्या पवित्रा विद्यालंकार जी, आचार्या प्रियंवदा जी, डॉ. शिवकुमार शास्त्री जी, डॉ. महावीर अग्रवाल जी, डॉ. जयदेव वेदालंकार जी, प्रो. रूपकिशोर जी, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, श्री आनन्द कुमार जी (टांडा), डॉ. आनन्द कुमार जी पूर्व आई.पी.एस., पं. माया प्रकाश त्यागी जी (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा), श्री अनिल आर्य जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी।

सायंकालीन यज्ञ

समय : 6.30 बजे
ब्रह्मा : आचार्या नन्दिता देवी जी, पाणिनी संस्कृत कन्या महाविद्यालय बनारस
संयोजक : श्री सोमदत्त शास्त्री जी–चण्डीगढ़
सह–संयोजक : श्री चन्द्रभूषण शास्त्री जी–पौंधा, श्री रमाकान्त सारस्वत जी–आगरा, श्री सत्येन्द्र पाल जी–खतौली, श्री विपिन आर्य जी–सहारनपुर, श्री दिनेश

आर्य जी–हरिद्वार, श्री रिपुदमन आर्य जी (बागपत)।
वेद पाठ : पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस, कन्या गुरुकुल सासनी, गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल, गुरुकुल मंझावली,
व्यवस्थापक : आर्य विजयपाल, डॉ. नवनीत परमार
भजन : श्री कैलाश कर्मठ कलकत्ता, सुश्री प्रियंका भारती, गुरुकुल भुसावर
प्रवचन : स्वामी विश्वानन्द (दखोला) व स्वामी अखिलानन्द (पूठ)
मुख्य यजमान : श्रीमती मधुर भाविणी एवं श्री अरविन्द मेहता दीनानगर, श्रीमती नीरज नरूला एवं श्री संजीव नरूला यमुनानगर, श्री रघुवीर सिंह आर्य शामली, श्री आनन्द प्रकाश आर्य हापुड़

वैदिक संस्कृति सम्मेलन

समय : 8 से 10 बजे तक
अध्यक्षता : स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
मुख्य अतिथि : श्री प्रेम प्रकाश आर्य, प्रधान झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
विशिष्ट अतिथि : श्री श्रीराम आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल
: आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, उपप्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल
: श्री रामानन्द प्रसाद आर्य, उपप्रधान, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
: श्री प्रभा शंकर तिवारी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य प्रदेश विदर्भ
: डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, प्रधान मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा
संयोजक : आचार्य अमन सिंह शास्त्री (कन्या गुरुकुल हसनपुर)
सह–संयोजक : श्री चन्द्रदेव शास्त्री, दिल्ली
: श्री शम्भू मित्र शास्त्री, गुरुकुल सिंहपुरा
वक्ता : विभिन्न गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राएं

7 जुलाई (शनिवार), 2018

चतुर्वेद शतक महायज्ञ

यज्ञ : प्रातः 8 बजे से
ब्रह्मा : डॉ. जयेन्द्र कुमार, आचार्य गुरुकुल नोएडा
संयोजक : श्री महेन्द्र भाई, महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
सह–संयोजक : श्री पंकज आर्य, अध्यक्ष आर्य वीरदल, उ. प्र.
: श्री कमल आर्य, नागदा
: श्री संजय सत्यार्थी, बिहार
वेद पाठ : गुरुकुल नोएडा, गुरुकुल बरनावा, गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल, कन्या गुरुकुल शिवगंज, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, कन्या गुरुकुल रुड़की (रोहतक)
व्यवस्थापक : श्री मान पाल सिंह राठी, नारसन, श्री दयाकृष्ण कांडपाल, अल्मोड़ा, श्री विश्वमित्र मेधार्थी, रुद्रपुर, श्री रामदेव आर्य दिल्ली
भजन : श्री सहदेव बेधड़क, प्रधान भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्
प्रवचन : स्वामी विदेह योगी, कुरुक्षेत्र, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार दिल्ली, डॉ. वेदपाल मेरठ
मुख्य यजमान : श्री वीरेश भाटी नोएडा, श्री सत्यवीर चौधरी गाजियाबाद, डॉ. गजराज सिंह आर्य, फरीदाबाद, श्री सुशील बाली दिल्ली, श्री राव रघुनाथ सिंह नजफगढ़, श्री अमित मान दिल्ली, पं. राजवीर वशिष्ठ, टिटौली, चौ. रामकुमार सिंह आर्य।

ध्वजारोहण

समय : प्रातः 10.30 बजे
मुख्य अतिथि : चौ. हरि सिंह सैनी, पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार
विशिष्ट अतिथि : डॉ. बिसराम रामबिलास, दक्षिण अफ्रीका
: प्रो. रासा सिंह रावत, पूर्व सांसद, अजमेर
: प्रि. सदाविजय आर्य, महाराष्ट्र
: श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
संयोजक : श्री विरजानन्द एडवोकेट, महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
सह–संयोजक : श्री हरि किशन वेदालंकार (हैदराबाद), ब्र. रामफल आर्य, प्रधान आर्य युवक परिषद्, उत्तर प्रदेश, श्री अभिषेक आर्य भोंगला (हरिद्वार), श्री अजय अमर चौरसिया एडवोकेट, छतरपुर (म. प्र.), श्री संजय गायकवाड़ एडवोकेट (इंदौर)

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन

समय : प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक
अध्यक्षता : आचार्य बालकृष्ण जी, पातंजलि योगपीठ, हरिद्वार
मुख्य अतिथि : चौ. बीरेन्द्र सिंह, केन्द्रीय इस्पात मंत्री, भारत सरकार
विशिष्ट अतिथि : श्री धन सिंह रावत जी, शिक्षामंत्री उत्तराखण्ड सरकार
: डॉ. योगानन्द शास्त्री, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली
: श्री गोपाल बाहेती जी, कार्यकारी प्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मृति न्यास अजमेर
संयोजक : डॉ. धनंजय आर्य, आचार्य गुरुकुल पौंधा, देहरादून
प्रमुख वक्ता : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली
: डॉ. महावीर मीमांसक, दिल्ली
: आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुम्बई
: डॉ. रघुवीर वेदालंकार, मु. नगर
: डॉ. भारत भूषण, हरिद्वार
: डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, शिवगंज
: आचार्या सुकामा, रुड़की, रोहतक
: डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, सासनी हाथरस,
: डॉ. अन्नपूर्णा, देहरादून

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प सम्मेलन

समय : मध्यान 1 से 3 बजे तक
अध्यक्षता : ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी
मुख्य अतिथि : श्री विपुल गोयल, उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार
विशिष्ट अतिथि : श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा
: डॉ. वेद प्रताप वैदिक, प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक
प्रमुख वक्ता : डॉ. जयदेव विद्यालंकार, हरिद्वार प्रो. रूप किशोर शास्त्री, डॉ. शिव कुमार शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. रवि प्रकाश आर्य, डॉ. आनन्द कुमार, पूर्व आई.पी.एस., आचार्य प्रद्युम्न, डॉ. विजयपाल प्रचेता, स्वामी रामवेश, जीन्द, बहन पूनम आर्या–रोहतक, श्री प्रकाशवीर विद्यालंकार
संयोजक : ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

विशाल शोभा यात्रा

समय : सायं 3.30 से 6 बजे तक
नेतृत्व : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी रामवेश, स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यशानन्द सरस्वती, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, स्वामी यज्ञमुनि, स्वामी विश्वानन्द, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी विजयवेश।
संयोजक मण्डल : श्री रामकुमार सिंह आर्य (दिल्ली), श्री दलपत सिंह आर्य, बहन प्रवेश आर्या (रोहतक), श्री धर्मेन्द्र आर्य (छपरौली), श्री शिवदत्त आर्य (जालौर), श्री हरदेव आर्य (शिवगंज), श्री चांदमल आर्य (जोधपुर), श्री सज्जन सिंह राठी (जीन्द), श्री प्रदीप कुमार, श्री अशोक आर्य, श्री जयपाल आर्य, श्री हरपाल आर्य, श्री निखिल आर्य, श्री सविश कुमार एडवोकेट (कैथल), श्री शांति प्रकाश आर्य (करनाल), श्री तेजपाल सिंह आर्य, मा. ज्ञानेन्द्र आर्य (गाजियाबाद), श्री ज्ञानेन्द्र गांधी (मुरादाबाद), आचार्य वीरेन्द्र (सहारनपुर), श्री विजय आर्य (राजपुरा), श्री राजपाल आर्य (शामली), श्री जितेन्द्र आर्य (बल्लभगढ़), श्री नारायण सिंह (पलवल), श्री रमाकान्त सारस्वत (आगरा), श्री दलबीर सिंह (हिसार), श्री यशपाल 'यश' (जयपुर), श्री कृष्णपाल खलीफा, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री (हरिद्वार), आचार्य अखिलेश, बहन प्रवेश आर्या।

सायंकालीन यज्ञ

समय : सायं 6.30 बजे से
ब्रह्मा : आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
संयोजक : डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्राचार्य ब्रह्म महाविद्यालय हिसार
सह–संयोजक : आचार्या धारणा याज्ञिकी, कन्या गुरुकुल प्रह्लादपुर, कासगंज
: श्री पूर्णचन्द्र आर्य, मंत्री झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
: आचार्य संजीव 'रूप' बदायूं
: श्री जानकी प्रसाद शर्मा, जयपुर
वेद पाठ : कन्या गुरुकुल जसात, कन्या गुरुकुल लोवा कलां, कन्या गुरुकुल पचगांव, गुरुकुल नरसिंह नाथ, गुरुकुल दयोला, गुरुकुल गौतमनगर।
व्यवस्थापक : श्री ओम प्रकाश मलिक, देहरादून, श्री दिनेश आर्य, रुहालकी, जगपाल सिंह आर्य, श्री अवनीश आर्य, श्री नरेन्द्र पहलवान छपरौली
भजन : श्री सत्यपाल सरल, देहरादून
प्रवचन : डॉ. ओम प्रकाश योगी (पाली)
: श्री लाजपत राय चौधरी (करनाल)
: आचार्य गुरुवचन शास्त्री (बरनावा)

भवत्येकनीडम् सम्मेलन

समय : रात्रि 8 से 10 बजे तक
अध्यक्षता : स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, उड़ीसा
मुख्य अतिथि : डॉ. यशदेव शास्त्री, पातंजल योगपीठ, हरिद्वार
विशिष्ट अतिथि : स्वामी ओमवेश, पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तर प्रदेश
: वैद्य इन्द्रदेव आर्य, उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा
: श्री सुभाष शास्त्री, प्रधान आर्य समाज बांग्लादेश
: श्री राम प्रह्लाद शर्मा, प्रधान आर्य समाज जर्मनी
: श्री चन्द्रभान आर्य, आर्य समाज न्यूयार्क
: श्री विवेक मलिक, अमेरिका
: श्री अनिल कपिला, नैरोबी (कीनिया)

	: आचार्य विजयपाल (झज्जर)
	: श्री रामसिंह आर्य, जोधपुर
	: श्री जयनारायण आर्य, महराजपुर
संयोजक	: श्री अनिल आर्य, उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रमुख वक्ता	: आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, डॉ. अमर कौर करनाल, श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, श्री रामस्वरूप रक्षक, श्री हरिशंकर अग्निहोत्री, डॉ. यशवीर सिंह (दिल्ली), श्री रविदेव गुप्ता, श्री सारस्वत मोहन मनीषि, स्वामी सच्चिदानन्द (यमुनानगर), डॉ. नवीन आर्य, अमृतसर।

8 जुलाई, 2018

यज्ञ	: प्रातः 8 बजे से
ब्रह्मा	: स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
संयोजक	: डॉ. योगेश शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
वेद पाठ	: गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली, गुरुकुल पौंधा, गुरुकुल मंझावली
सह—संयोजक	: आचार्य बुद्धदेव, आचार्य इन्द्रपाल, आचार्य सुधांशु, श्री रामवीर शास्त्री
व्यवस्थापक	: मेजर विजय आर्य, आर्य हरपाल सैनी, रुड़की, श्री टेलूराम आर्य
मुख्य यजमान	: श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री एवं श्रीमती सरोज अग्निहोत्री
	: श्री श्रीकान्त वर्मा
भजन	: श्री रामनिवास आर्य, पानीपत
प्रवचन	: स्वामी आनन्दवेश, आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री

ध्वजारोहण

समय	: प्रातः 10.30 बजे
मुख्य अतिथि	: श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट, प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा
विशिष्ट अतिथि	: भाई वीरेन्द्र विधायक, प्रधान, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
	: श्री ओम प्रकाश आर्य, प्रधान, आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी
	: श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, मुजफ्फरनगर, श्री छगा सिंह आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
संयोजक	: डॉ. वीरेन्द्र पंवार, प्रबन्धक, आर्य समाज श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार
सह—संयोजक	: श्री इन्द्रजीत आर्य (नरवाना), श्री वरुण बिहारी (रांची), श्री ओम प्रकाश वर्मा (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान)

वेद एवं संस्कृत सम्मेलन

समय	: प्रातः 11 बजे से
अध्यक्षता	: श्री महावीर अग्रवाल, कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार
मुख्य अतिथि	: डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक, सांसद हरिद्वार क्षेत्र
विशिष्ट अतिथि	: श्री प्रेमचन्द अग्रवाल, विधानसभा अध्यक्ष उत्तराखण्ड
	: श्री राजेन्द्र बिसला, पूर्व विधायक बल्लभगढ़
संयोजक	: डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, दिल्ली
प्रमुख वक्ता	: श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान
	: स्वामी श्रद्धानन्द, पलवल
	: श्री विनोद चन्द्र विद्यालंकार, हरिद्वार
	: डॉ. विक्रम विवेकी, चण्डीगढ़
	: डॉ. हरिगोपाल शास्त्री, महाविद्यालय ज्वालापुर
	: डॉ. वागीश आचार्य, एटा
	: आचार्य हनुमत प्रसाद, गुरुकुल टटेसर, दिल्ली
	: डॉ. सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
	: श्रीमती गायत्री मीणा, नोएडा
	: डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक, पंचकूला

सम्मान समारोह

समय	: मध्यान्ह 1 से 2 बजे तक
अध्यक्षता	: कै. रुद्रसेन सिन्धु, रोहतक
संयोजक	: श्री मधुर प्रकाश, दिल्ली
विशेष	: मानव सेवा प्रतिष्ठान (दिल्ली), एवं स्वामी इन्द्रवेश प्रतिष्ठान, टिटौली (रोहतक) द्वारा विशिष्ट विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों तथा भजनोपदेशकों का सम्मान किया जायेगा।

समापन समारोह

समय	: 2 से 4 बजे तक
मुख्य अतिथि	: श्री सत्यपाल मलिक, महामहिम राज्यपाल, बिहार
विशिष्ट अतिथि	: श्री प्रकाश पन्त, वित्तमंत्री, उत्तराखण्ड सरकार
	: स्वामी अग्निवेश, अध्यक्ष, बंधुआ मुक्ति मोर्चा
	: स्वामी यतीश्वरानन्द, विधायक हरिद्वार ग्रामीण
अध्यक्षता	: स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली
संयोजक	: प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धन्यवाद ज्ञापन	: स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
	: डॉ. दीनानाथ शर्मा, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

शांति पाठ के साथ समापन।

वेद-व्याखा के प्रयास, स्वामी दयानन्द का महान् योगदान

-आचार्य रामनाथ विद्यालंकार

प्राचीन युग में वेद का अध्येता वैदिक भाषा से सुपरिचित होने के कारण वेदार्थ को भलीभाँति हृदयंगम कर लेता था, किन्तु शनैः शनैः वेदार्थ के ह्रास का युग आ गया, यहाँ तक कि कौत्ससदृश वेदो के श्रद्धालुजन भी यह कहने लगे कि वेदों का अर्थ कुछ नहीं होता, वेदमन्त्र तोपाठमात्र से अदृष्ट उत्पन्न कर यज्ञादि में मन्त्रों का उच्चारण करनेवाले को स्वर्ग या मोक्ष दिलाते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो गया कि वेदार्थ को सर्वसाधारण एक पहुँचाने के लिए वेदार्थ-ज्ञापक ग्रन्थों की रचना की जाए। तब वेदज्ञों ने शिक्षा, वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं छन्ध-शास्त्र नामक वेदांगों की रचना की। वैदिक कर्मकाण्ड को सुरक्षित रखने के लिए ब्राह्मणग्रन्थों का तथा श्रौत एवं गृह्य सूत्रों का निर्मा किया गया। वेदों में निहित अध्यात्म तत्व को उजागर करने के लिए आरण्यक एवं उपनिषदें रची गयीं।

ब्रह्मणग्रन्थ केवल कर्मकाण्ड के विवेचन द्वारा ही नहीं, अपितु वेद में अध्यातम, अधिराष्ट्र्र एवं अधिदैवत तत्त्वों के अनुसन्धान सम्बन्धी दिशानिर्देश द्वारा भी हमें उपकृत करते हैं। वे अग्नि, इन्द्र आदि वैदिक देवों का भौतिक जगत् में, शरीर में एवं राष्ट्र या समाज में भी स्थान निश्चित करने का प्रयास करते हैं। यथा, उनके अनुसार बाह्य जगत् में सूर्य, वायु या विद्युत् इन्द्र है, शरीर में प्राण या मन इन्द्र हैं, राष्ट्र में राजा या सेनापति इन्द्र है। ऐसे ही संकेत प्रायः सभी वैदिक देवों के सम्बन्ध में ब्राह्मणग्रन्थों में आते हैं। किसी प्रसंग को अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ एवं अधिभूत में घटाने की प्रवृत्ति भी ब्राह्मणग्रन्थों की विशेष देन है।

वेद-व्याख्या के प्रसंग में वैदिक निघण्टुकोष के व्याख्याता यास्कीय निरुक्त को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता, जिसमें वेद के सभी नाम-पदों के धातुज होने के सिद्धान्त का सयुक्ति प्रतिपादन किया गया है, जिसमें लगभग १३०० वैदिक शब्दों के निर्वचन एवं अर्थ किये गये हैं, जिसमें लगभग २५० सम्पूर्ण मन्त्रों तथा ४०० से अधिक मन्त्राशों की व्याख्या प्रस्तुत कर दी गयी है और साथ ही जिसमें कई मन्त्रों के व्याख्यान अधिदैवत, अध्यात्म, अधियज्ञ आदि विविध दृष्टियों से किये गये हैं। मन्त्रों के विविध क्षेत्रों में व्याख्यान सबसे पूर्व निरुक्त में ही उपलब्ध होते हैं, यद्यपि इस व्याख्या-शैली के दिग्दर्शक स्वयं वेद ही हैं तथा ब्राह्मग्रन्थ भी इस शैली का संके कर चुके थे।

इसके अनन्तर वेद-व्याख्या में योगदान करनेवालों में वेदभाष्यकार आते हैं, जिन्होंने एकाधिक वेदों का, किसी एक वेद का अथवा वेद के किसी अंश का भाष्य किया है। **ऋग्वेद** के भाष्यकारों में सर्वप्रथम उल्लेखनीय नाम **स्कन्दस्वामी** (संवत् ६८७) का है, जिनका ऋग्वेद के प्रथम अष्टक सम्पूर्ण का तथा अष्टक ४-५ के कतिपय सूक्तों का मुद्रित भाष्य उपलब्ध है। इनकी अपनी ही प्रतिज्ञा के अनुसार इनका भाष्य कर्मकाण्ड का उपकारक है। **उद्गीय** इन्हीं के सहकारी थे तथा इनका अपना स्वतन्त्र भाष्य ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त ४, मन्त्र ४ से सूक त १६, मन्त्र ६ तक ही मुद्रित उपलब्ध है। यह भी कर्मकाण्ड का ही समर्थ के है।

वेंकट माधव)१२वीं विक्रमी शती) ने प्रायः सम्पूर्ण ऋग्वेद पर भाष्य किया है, जो स्वल्पाक्षर है तथा याज्ञिक पद्धति पर आश्रित है। **आनन्द तीर्थ** (संवत् १२५५-१३३५) ने ऋग्वेद के प्रथम ४० सूक्तो पर आध्यात्मिक भाष्य की रचना की है, जिसमें अग्नि, वायु आदि नामों से नारायण को प्रतिपाद्य माना है। **आत्मानन्द** (१३वीं विक्रमी शती) का ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋ०१.१६४) पर अध्यात्मपरक भाष्य है। **सायण** (संवत् १३७२-१४४४) का बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर सम्पूर्ण ऋग्वेद पर भाष उपलब्ध है। इन्होंने अन्य वेदों पर भी भाष्य किया है। इनकी भाष्यपद्धति यज्ञपरक है, यद्यपि कहीं-कहीं इन्होंने अद्यात्म अर्थ भी प्रदर्शित किये हैं।

यजुर्वेद वाजसनेयी माध्यन्दिन संहिता पर **उवट** (संवत् १९००) तथा **महीधर** (संवत् १६४५) के कर्मकाण्डपरक भाष्य हैं, जो शतपथ ब्राह्मण एवं कात्यायन श्रौतसूत्र की पृष्ठभूमि पर रचे गये हैं और जिनमें यह साहस नहीं किया गया है कि कर्मकाण्ड में जो अयुक्तियुक्त तथा मन्त्रार्थविरुद्ध बिनियोग प्रचलित थे उन पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता। सायण का शुक्लयजुर्वेद की काण्वसंहिता पर तथा कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता पर भाष्य है। ये भाष्य भी कर्मकाण्डानुसारी हैं। तैत्तिरीयसंहिता पर **भट्टभास्कर** (संवत् ११००) का भाष्य भी कर्मकाण्डपरक है।

सामवेद के तीन भाष्यकार उल्लेखनीय हैं। माधव, भरतस्वामी और सायण। माधव और भरतस्वामी दोनों का एक साथ प्रो. कुन्हन राजा द्वारा सम्पादिक एक भाष्य अड्यार लाइब्रेरी से सन् १९४१ में प्रकाशित हुआ था, जो केवल पूर्वार्चिक (मन्त्र क्रमांक ५८५ तक) हैं। शेष भाग अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। माधव का काल अनुमानतः ७वी शती विक्रमी है। इनके पिता का नाम नारायण है। इनका भाष्य पदों के मनत्रोक्त क्रम का अनुसरण करता है। अनेक स्थलों पर अध्यात्मपरक अर्थ भी निरूपित किये गये हैं। इनकी प्रवृत्ति वैकल्पिक एकाधिक अर्थ देने की बहुत है। इन्होंने स्थान-स्थान पर अपने भाष्य में व्यत्यय स्वीकार किये हैं। इनके भाष्य का नाम 'विवरण' है। ये अपने पूर्वार्चिक के भाष्य को 'छन्दसिका

विवररण' तथा उत्तरार्चिक के भाष्य को 'उत्तर विवरण' कहते हैं । भरतस्वामी कश्यपगोत्री थे, इनके पिता का नाम नारायण आर्य और माता का नाम यज्ञदा था । इन्होंने होसलाधीश्वर रामनाथ के राजत्व-काल में श्री रंगपटम् में निवास करते हुए सामवेद का भाष्य किया था । उक्त होसलाधीश्वर का काल बर्नल के अनुसार सन् १२७२-१३१० है । इस दृष्टि से भरतस्वामी ना सामभाष्य विक्रमी संवत् १३६० है । इस दृष्टि से भरतस्वामी ने सामभाष्य विक्रमी संवत् १३६० के आस-पास किया होगा । इन्होंने भी कई मन्त्रों के अध्यात्मपरक अर्थ प्रदर्शित किये हैं । माधव और भरतस्वामी दोनों कई स्थानों पर अपने मन्त्र-व्याख्यानों के लिए प्रमाणस्वरूप वेदमन्त्र उद्धृत करते हैं, ब्राह्मणग्रन्थों के उद्धरण भी देते है ।

सायण का काल अनुमानतः संवत् १३७२-१४४४ है । ये महाराज बुक्क प्रथम के राजमन्त्री थे और उन्हीं के आदेशानुसार वेदभाष्य में प्रवृत्त हुए थे । इन्होंने याजुष तैत्तिरीय संहिता तथा ऋग्वेद का क्रमशः व्याख्यान करके तदनन्तर सामवेद का भाष्य किया था । ऋग्वेदगत सामन्त्रों का भाष्य इन्होंने अपने ऋग्वेदभाष से ही ले लिया है । इसी कारण ऋग्वेदीय मन्त्र की अपेक्षा सामवेद में जहाँ भिन्न पाठ है, वहाँ भी ऋग्वेदीय पाठ की ही व्याख्या इनके सामभाष्य में पायी जाती है । यह इनके सामभाष्य की एक विसंगति है ।

अथर्ववेद (शौनकीय) पर सायण का ही भाष्य उपलब्ध है, जो कौशिकसूत्र तथा वैतानसूत्र के विनियोगों का अनुसरण करता हैं और जिसमें टोने-टोटके, मन्त्र-तन्त्र, कृत्या-अभिचार आदि का वर्णन एवं अरूपसमृद्ध विनियोग स्थान-स्थान पर हैं ।

उपर्युक्त समस्त भाषें पर दृष्टिपात करके हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि उनमें से अधिकतर केवल कर्मकाण्ड को आधार बनाकर लिखे गये हैं, असम्भव किस्से-कहानी एवं मनघड़न्त इतिहास को पदे-पदे दर्शाते हैं, अग्नि-अग्नायी, इन्द्र-इन्द्राणी आदि वैदिक देव-देवियों का वाच्यार्थ कुछ भी स्पष्ट नहीं करते, अभिमानी-देवता की मनमानी कल्पना से ओतप्रोत हैं, मांसभक्षण, पशुबलि, मन्त्र-तन्त्र, मारण-उच्चाटन आदि की पैशचिकता को सम्मुख नहीं आता । जो अध्यात्मपरक भाष्य हैं वे एक तो वेद के बहुत छोटे से भाग पर किये गये हैं, दूसरे उन पर प्रायः वेदान्तिक विचारधारा का ही प्रभाव है, अतः वेद के सच्चे स्वरूप को उजागर नहीं कर पाते ।

विदेशी विद्वानों का प्रयास

वेदव्याख्या के प्रसंग में विदेशी विद्वानों के प्रयास की भी चर्चा कर लेना उचित होगा । जर्मन विद्वान् मैक्समूलर ने अपनी 'सेक्रेड बुक ऑफ द ईस्ट' नामक शृंखला के एक भाग में मरुत्, रुद्र, वायु और वात देवताओं के ऋक्सूक्तों का अंग्रेजी भाषान्तर किया था । सन् १८५० में डॉक्टर एच० एच० विल्सन ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद किया, जिसमें सायणभाष्य को आधार रख गया है । जर्मन विद्वान् एच० ग्रासमान ने १८७६-९९ ई० में ऋग्वेद का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद किया, जो सायणभाष्य से सर्वथा स्वतन्त्र है तथा रॉथ की भाषावैज्ञानिक पद्धति पर आश्रित है । जर्मनी के ही ए० लुडविग ने १८७५-८६ में छह जिल्दों में ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद विस्तृत भूमिका तथा व्याख्या के साथ किया कार्ल गैल्डनर ने १९२३-५१ ई० में सम्पूर्ण ऋग्वेद का अपना अनुवाद प्रकाशित कराया । आर० टी० एच० ग्रिफित ने १८८९-९८ ई० में चारों वेदों का अंग्रेजी पद्यानुवाद किया । जर्मन विद्वान् डाक्टर एच० ओल्डनवर्ग ने १९०९-२ ई० में जर्मन भाषा में ऋग्वेद की विचनापूर्ण व्याख्या दो जिल्दों में प्रकाशित करायी । लांगल्वा नामक एक विद्वान् ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का चार भागों में फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया है ।

कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता का एक अंग्रेजी अनुवाद डॉक्टर ए० बी० कीथ ने किया, जो हार्बर्ड ओरियण्टल सिरीज़ में सन् १९१४ में अमेरिका से छपा था । जे० स्टेवन्सन ने सामवेद की राणायनीय शाखा का संस्करण अंग्रेजी अनुवाद सहित सम्पादित किया, जिसे विल्सन ने १८४३ ई० में प्रकाशित किया । थियोडोर बेन्फे ने सामवेद की कौथुम शाखा का संस्करण जर्म भाषानुवाद सहित १८४८ ई० में प्रकाशित कराया । अथर्ववेद की शौनकीय शाखा डब्ल्यू० एच० ह्विटने ने भूमिकायुक्ता अपूण४ सटप्पण अनुवाद किया था, जिसे सी० आर० लेनमेन ने पूरा करके १९०९ ई० में प्रकाशित कराया था । ब्लूमफील्ड ने अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा का अंग्रेजी अनुवाद १९०१ ई० में प्रकाशित कराया । इसके अतिरिक्त विविद वैदिक संहिताओं, भाष्यों ब्राह्मणग्रन्थों आदि के शुद्ध संस्करण, व्याख्यासहित वेदमन्त्रसंकलन, कोश आदि का प्रकाशन भी वैदेशिक विद्वानों ने किया है ।

विदेश के अन्वेषकों द्वारा किये गये वेदभाषान्तर एवं वेदव्याख्यान या तो सायणभाष्य पर आधारित हैं, अथवा नूतन हैं तो भारतीय परम्परी की उपेक्षा करके विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक पद्धति का अवलम्ब लेकर चले हैं, अतः इनका प्रयास किसी अंश में प्रशंसनीय होते हुए भी वेदों के रहस्यार्थ को प्रकट करने में सर्वथा असमर्थ रहा है ।

स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदसंहिता का प्रारम्भ से लेकर सप्तम मण्डल के ६१वें सूक्त के २य मन्त्र तक और वाजसेनयी माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता सम्पूर्ण का भाष्य किया है । उनका यह वेदभाष्य पूर्ववर्ती भाष्यों की अपेक्षा अनेक नवीन विशेषताएँ रखता है, जिनमें से कुछ का यहाँ दिग्दर्शन करा देना उपयोगी होगा ।

१. वैदिक देवों का अर्थानुसन्धान

वेदों में अग्नि, वायु, इन्द्र, अश्विनौ, मित्र, वरुण, अर्यमा, रुद्र, सविता आदि पुंलिंगी देवों का तथा अदिति, उषस्, सरस्वती, पृथिवी आदि स्त्री लिंगी देवताओं का पुनः पुनः वर्णन आता है । उवट, सायण, महीधर आदि पूर्ववर्ती भाष्यकारों ने इन्हें पृथक् स्वतन्त्र देव-देवियाँ स्वीकार किया था तथा यह माना था कि वेदवर्णित प्रत्येक प्राकृतिक देवता उषा, सूर्य पृथिवी, आपः नदी, औषधि आदि का एक-एक

स्वतन्त्र चेतन अभिमानी-देवता है, उसी चेतन देवता की इन नामों से वेद में स्तुति की गयी है। जिन देवताओं का प्राकृतिक स्वरूप निश्चित नहीं है, वे भी स्वतन्त्र देवता हैं। यज्ञों में आवाहन करने पर ये देवता हवि से प्रसन्न होकर यजमान को पुत्र, पौत्र, पशु, धन आदि प्रदान करते हैं। परन्तु स्वामी दयानन्द ने प्रमाणपुरस्पर यह घोषणा की कि वेद अनेकेश्वरवादी नहीं हैं, अपितु वेदों के विभिन्न पुंलिंगी और स्त्रीलिंगी देवता पिता और माता के रूप में एक परमेश्वर के ही गुण-कर्म-बोधक विभिन्न नाम हैं। वेद की वर्णन-शैली की यह अद्भुतता है कि साथ ही वे देवता शरीर में आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण, अपान, उदान, चक्षु, श्रेत्र आदि के, राष्ट्र में राजा, सेनापति, न्यायाधीश, गृहपति, आचार्य आदि के और भौतिक जगत् में प्रकृति, सूर्य चन्द्र, वायु, अग्नि, जल आदि के भी वाचक होते हैं। जहाँ जैसा प्रकरण हो वहाँ वैसे अर्थ करने चाहिएँ। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर दयान्दभाष्य में प्रसंग या औचित्य के अनुसार **'अग्नि'** के अग्रणी विज्ञानस्वरूप सर्वविद्योपदेष्टा स्वयंप्रकाशमान प्रकाशक परमेश्वर, विद्वान् अध्यापक, उपदेश, नायक, राजा, वीर सेनापति, यज्ञाग्नि, शिलप में प्रयोक्तव्य भौतिक अग्नि आदि अर्थ किये गये हैं। **'इन्द्र'** को ऐश्वर्यशाली परमेश्वर, शत्रुविदारक राजा, सभाशाला-सेनान्यायाधीश, विद्यार्थियों की जड़ता का विच्छेदक गुरु, वायु विद्युत्, सूर्य आदि अर्थों में ग्रहण किया गया है। **'रुद्र'** को दुष्टरोदक परमात्मा, जीवात्मा, वैद्य, वायु, प्राण, शत्रुसंहारक सेनापति, ब्रह्मचारी आदि अर्थो में व्याख्यात किया गया है। **'अश्विनौ'** के राजा-अमात्य, प्राण-अपान, जल-अग्नि, वायु-विद्युत्, सूर्य-चन्द्र, अध्यापक-उपदेशक सभेश-सेनेश आदि अर्थ किये गये हैं।

वैदिक देवियों को भी स्वामी दयानन्द ने भौतिक जगत् एवं शरीर में घटाने के साथ-साथ समाज में भी घटाया है। तदनुसार उनके भाष्य में **'उषा'** का अर्थ प्रभातवेला या सन्ध्या के अतिरिक्त उषा के समान ज्ञान से समस्त रूपों की प्रकाशिका विदुषी स्त्री भी किया गया है। इसी प्रकार 'सरस्वती' का अर्थ वाणी एवं वेगवती दी के अतिरिक्त विदुषी कन्या, प्रशस्त ज्ञानवती विदुषी स्त्री, प्रशस्तविज्ञानयुक् ता पत्नी, शिक्षिता माता एवं वेदादिशास्त्रविज्ञानयुक्ता अध्यापिका भी किया है। प्रचुरता के साथ वैदिक देवताओं को सामाजिक या राष्ट्रिय अर्थों में लेकर सम्पूर्ण मन्त्र को सामाजिक या राष्ट्रपरक अर्थ की रंगत देना स्वामी दयानन्द की ही महत्त्वपूर्ण देन है। इससे पूर्व ब्राह्मणग्रन्थों में ऐसे अर्थों के क्वचित् संकेतमात्र दिये गये थे। स्वामी दयानन्द ने वैदिक देवताओं के जो अर्थ दिये हैं वे स्वयं वेदों से तथा ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक आदि साहित्य से समर्थित हैं।

वेदमन्त्रों की अनेकार्थकता

वेदमन्त्रों के अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ आदि अर्थ करने की परम्परा पहले से ही प्रवृत्त थी। यास्क ने अपने निरुक्त में कई स्थलों पर इस प्रकार की मन्त्र-व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं। स्वामी दयानन्द ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। उन्होंने मन्त्रार्थों को दे भागों में विभक्त किया है - पारमार्थिक अर्थ और व्यावहारिक अर्थ। इन्हीं दो मे पूर्व आचार्यों से निर्धारित अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिभूत आदि सकल अर्थ-प्रक्रियाएँ समाविष्ट हो जाती हैं। परमेश्वर तथा परमेश्वर-प्राप्ति सम्बन्धी अर्थ पारमार्थिक प्रक्रिया में और शेष सब अर्थ व्यावहारिक प्रक्रिया के अन्तर्गत होते हैं।

स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में वेदमन्त्रों की अनेकार्थक योजना अनेक स्थलों पर की है। ऋग्वेद के प्रथम पाँच अग्निदेवताक मन्त्रों की व्याख्या उन्होंने परमेश्वरपरक तथा शिल्पाग्निपरक की है। **'धूरसि धूर्व धूर्वन्तम्'** यजु० १.८ में भी अग्नि के अर्थ परमेश्वर तथा शिल्पसाधक अग्नि दोनों लिए हैं। वायुदेवताक ऋ० १.२.१-३ इन तीनों मन्त्रों की व्याख्या परमेश्वर तथा भौतिक वायु दोनों पक्षों में की है। इन्द्र देवता के **'युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषम्'**, ऋ० १.६.१ मन्त्र को परमेश्वर, आदित्य और प्राण तीन पक्षों में व्याख्यात किया है। **'आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो'** ऋ० १.३५.२ आदि सवितृदेवताक मन्त्र के अर्थ परमेश्वर तथा सूर्य उभय पक्ष में किये हैं। सूर्यपरक अर्थ में सूर्य का आकर्षणशक्ति का वर्णन किया है। **'अदित्यास्त्वगसि'**, यजु० ४.३० आदि वरुणदेवताक मन्त्र की व्याख्या परमेश्वर, सूर्य तथा वायु तीन पक्षों में की है। **'कद्रुद्राय प्रचेतसे'** ऋ० १.४३.१ आदि रुद्र देवता के मन्त्र को परमेश्वर, जीवात्मा तथा भौतिक वायु तीन पक्षों में घटाया है। इन्द्र देवता के **'योगे योगे तवस्तरम्'** ऋ० १.३०.७ आदि मन्त्र की ईश्वर तथा सेनाध्यक्ष दो पक्षों में व्याख्या की है। प्रसिद्ध मन्त्र **'यां मेधां देवगणाः'** यजु० ३२.१४ में अग्नि पद से जगदीश्वर तथा विद्वान् अध्यापक का ग्रहण किया है। **'अयं मित्रो नमस्यः'** ऋ. ३.५९.४ आदि मन्त्र में मित्र के अर्थ ईश्वर तथा राजा लेकर व्याख्यान किया गया है। **'पुरां भिन्दुर्'**, ऋ० १.११.४ आदि इन्द्रविषयक मन्त्र की व्याख्या सूर्य और सेनापति उभय पक्षों में की है। सोम देवता का **'त्वं सोमासि सत्पति'** ऋ० १.११.४ आदि इन्द्रविषयक मन्त्र की व्याख्या सूर्य और सेनापति उभय पक्षों में की है। सोम देवता का **'त्वं सोमासि सत्पति'** ऋ० १.९१.५ आदि मन्त्र श्लेष से परमेश्वर, शालाध्यक्ष तथा सोम ओषधि तीन पक्षों में व्याख्यात किया गया है। **'वृत्रखादो बलंरुजः'** ऋ० ३.४५.२ आदि इन्द्रदेवताक मन्त्र की अर्थयोजना विद्युत्, सूर्य, वायु और राजा परक की गयी है। ऐसे मन्त्र दो सौ से भी अधिक हैं, जिनमें श्लेषालंकार मान कर स्वामीजी एकाधिक अर्थ करते हं। मन्त्रों की एकाधिक व्याख्याएँ जितनी स्वामीजी ने अपने वेदभाष्य में की हैं उतनी अन्य किसी वेदभाष्यकार ने नहीं की हैं।

ऐतिहासिक अर्थों की उपेक्षा

वेदमन्त्रों में प्रयुक्त नामों को किन्हीं ऐतिहासिक ऋषियों, ऋषिकाओं, राजाओं, रानियों, नदियों, नगरों आदि के नाम मान लेने की प्रवृत्ति वेदभाष्यकारों में पायी जाती है। वेदार्थ का ऐतिहासिक सम्प्रदाय यास्काचार्य (७०० ई० पू०) से भी पहले विद्यमान था, क्योंकि उन्होंने अपने निरुक्त ग्रन्थ में कई प्रसंगों में इस सम्प्रदाय का उल्लेख किया है। पर अपनी सम्मति उन्होंने

इसके विरोध में ही दी है। आधुनिक युग के वेदविचारक विदेशी विद्वानों का तो आधारस्तम्भ ही यह है, अतएव वेद में पदे-पदे इतिहास का अन्वेषण करने का पूर्वाग्रह उन्होंने बनाया हुआ है। विदेशों के विद्वान् वेदों में लौकिक इतिहास भले ही मानें, पर आश्चर्य तो तब होता है जब वेदों को सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ ईश्वरीय ज्ञान माननेवाले स्कन्दस्वामी, उवट, सायण, महीधर आदि भारतीय भाष्यकार भी अनेक स्थलों पर वेदमन्त्रों की इतिहासपरक व्याख्याएँ करते हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने सुदीर्घ वेदभाष्य में एक स्थल पर भी इतिहास नहीं माना है। ऋ० भा०भू० में वे स्पष्ट घोषणा करते हैं कि वेदमन्त्रों में इतिहास का लेश भी नहीं है, अतः आयणाचार्य आदि ने जहाँ-कहीं इतिहास का वर्णन किया है वह भ्रममूलक ही है।

अपने वेदभाष्य में भी कई स्थलों पर स्वामी दयानन्द ने सायण के ऐतिहासिक अर्थों का विरोध किया है। यथा, सायण ने ऋ० १.३१.११ में नहुष को राजा-विशेष, ऋ० १.१८.१ में कक्षीवान् औशिज को उशिक् नाम की माता का पुत्र कक्षीवान् ऋषि, ऋ० १.३१.१७ में ययाति को इस नाम का राजा, ऋ० १.३६.१८ में तुर्वश, यदु, उग्रदेव, नववास्तु, बृहद्रथ और तुर्वीति को राजर्षिविशेष माना है, पर स्वामी दयानन्द इन स्थलों पर नैरुक्त प्रक्रिया के अनुसार व्याख्यान करते हैं और सायण का नाम लेकर उसके इतिहासपरक अर्थों का खण्डन करते हैं। उनका तर्क है कि राजा नहुष आदि तो इदानींतन है और वेद सनातन है, अतः सनातन वेदों में परवर्ती ऐतिहासिक राजा आदियों की गाथा नहीं हो सकती।

वेदों में लौकिक इतिहास न होने की स्थापना तो अपने ऋग्वेदभाष्य के उपोद्घात में सायण ने भी की थी, पर वेदभाष्य में वे उसका निर्वाह नहीं कर पाये, किन्तु महर्षि दयानन्द ने अपनी प्रतिज्ञा का अपने वेदभाष्य में सर्वत्र निर्वाह किया है। वे अगस्त्य, अत्रि, अम्बरीष, कुत्स, कुशिक, त्रसदस्यु, दिवोदास, वसिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, शनुःशेप प्रभृति समस्त ऐतिहासिक प्रतीत होनेवाले नामों की नैरुक्त पद्धति से व्याख्या करते हैं। सचमुच वेद में इतिहास न मानकर योगार्थ के बल से जो अर्थ करने की पद्धति है उसी से वेद का रहस्यार्थ हृदयंगम किया जा सकता है। अन्यथा ऐतिहासिक कथाएँ जैसी भाष्यकरों ने रचकर वेदों पर थोपी हैं, वैसी प्रत्येक वेदमन्त्र पर बनायी जा सकती हैं। वेद के ऐतिहासिक सम्प्रदाय को व्यापक क्रियात्मक उत्तर देने का श्रेय एकमात्र वेदधुरन्धर दयानन्द को है।

पूर्व विनियोगों से स्वतन्त्र वेदार्थ

पूर्वकाल में दर्श, पौर्णमास, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, पुरुषमेध, सोमयाग आदि विविध श्रौत यागों में ब्रह्मयज्ञादि पञ्चयज्ञों में, जातकर्मादि विभिन्न संस्कारों में तथा अन्य अनेक विधि-विधानों में वेदमन्त्रों का विनियोग किया गया था। उन विनियोगों की परीक्षा करने से ज्ञात होता है कि उनमें कुछ विनियोग रूपसमृद्ध अर्थात् मन्त्रार्थ से अनुमोदित हैं और कुछ अरूपसमृद्ध हैं, अर्थात् या तो मन्त्रार्थ से विरुद्ध हैं या मन्त्रार्थ से असम्बन्ध हैं। ब्राह्मणग्रन्थकारों ने रूपसमृद्ध विनियोग भी चलते रहे और उन्हें प्रामाणिक भी माना जाता रहा। स्वामी दयान्द ने यह स्पष्ट घोषणा की कि पूर्वकृत विनियोगों में जो युक्तिसिद्ध, वेदादि प्रमाणों के अनुकूल और मन्त्रार्थ का अनुसरण करनेवाले विनियोग हैं, वे ही ग्राह्य हो सकते हैं। साथ ही यह भी माना कि वेदव्याख्या के लिए रूपसमृद्ध विनियोगों का भी अनुसरण करना अनिवार्य नहीं है, उन विनियोगों से स्वतन्त्र होकर भी वेद के व्याख्यान किये जा सकते है, अतएव उन्होंने ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का अपना भाष्य पूर्व विनियोगों का अनुसरण किये बिना ही लिखा है और भूमिका में यह निर्देश कर दिया है कि मैं तो शब्दार्थतः ही मन्त्रों की व्याख करूँगा, जिन्हें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त कर्मकाण्ड का परिचय पाना हो वे ऐतरेय, शतपथ, पूर्वमीमांसा, श्रौतसूत्रादि को देख सकते हैं, किन्तु उनमें जो वेदविरुद्ध विनियोग हैं उन्हें न मानें।

स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य से यह स्पष्ट है कि पूर्व विनियोग से स्वतन्त्र होकर की गयी उनकी वेदव्याख्या महोपकारक सिद्ध हुई है और उससे पाठक को वेदों में मानवोपयोगी विविध ज्ञान-विज्ञानों एवं कर्त्तव्यों का दर्शन हो जाता है तथा उसे यह भ्रान्ति नहीं होती कि वेद में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। महीधर ने पूर्व विनियोगों से बद्ध होकर तथा उनकी प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता का विचार किये बिना अपना यजुर्वेदभाष्य किया, अतः अनेक स्थलों पर वह भाष्य भ्रान्त है, यथा छठे अध्याय में अग्नीषोमीय पशुप्रयोग के प्रकरण में अज (बकरे) का वध, अश्वमेघ-प्रकरण में २३वें अध्याय में राजमहिषी का अश्वमेधीय अश्व के समीप शयन (मन्त्र १९-२१), राजपत्नियों तथा पुरोहितों के मध्य अश्लील हास-परिहास (म्त्र २२-३१), राजपत्नियों द्वारा अश्व के शरीर को सलाइयों से गोदा (मन्त्र ३३-३७) और अश्व का पेट काटना (मन्त्र ३९-४२), २५वें अध्याय में अश्व के काटे गये अंगों को देवताओं के लिए होम करना (मन्त्र २०) आदि। इन स्थलों पर पूर्व विनियोगों का अनुसरण न करते हुए लिखा गया दयानन्दभाष्य अत्यन्त चामत्कारिक तथा वेद के सत्य स्वरूप का प्रकाशक है।

वेदों में विविध विद्याओं का आविष्कार

पूर्व भाष्यकारों में से अधिकांश ने वेदों में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त अन्य किसी विद्या का आविष्कार नहीं किया था, परन्तु स्वामी दयान्द 'वेदों में सब विद्याएँ है' यह घोषणा करते हैं। उन्होंने अपने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ में ब्रह्मविद्या, सृष्टिविद्या, पृथिव्यादिलोक भ्रमणविद्या, आकर्षणानुकर्षणविद्या, प्रकाश्य-प्रकाशकविद्या, गणितविद्या, उपासनाविद्या, मुक्तिविद्या, नौविमानादिनिर्माणचालनविद्या, तारयन्त्रविद्या, राजविद्या, यज्ञविद्या, कृषिविवद्या, शिल्पविद्या, वर्णाश्रमविद्या आदि विविध विद्याओं का वैदिक प्रमाणों सहित प्रतिपादन किया है तथा स्वकीय वेदभाष्य में भी इनका प्रकाश किया है।

कतिपय अन्य विशेषताएँ

स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य में कुछ अन्य विशेषताएँ भी पायी जाती हैं, जो अद्वय वेदभाष्यकारों के भाष्यों में उपलब्ध

“सत्य को मानना व मनवाना हमारा कर्तव्य, धर्म एवं यज्ञ है”

–मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द (1825–1883) ने वेद व उसकी मान्यताओं और सिद्धान्तों पर आधारित धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए 10 अप्रैल, सन् 1875 को 'आर्यसमाज' की स्थापना की थी। ऐसा उन्होंने इस लिये किया था कि वेद ही सृष्टि विषयक मान्यताओं एवं सत्य गुणों पर आधारित मानवीय कर्तव्यों से संबंधित ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। वेद से इतर जितने भी धर्म व मत–मतान्तरों की पुस्तकें हैं वह सब इतिहास प्रसिद्ध महापुरुषों व मनुष्यों के बनाये हुए हैं। इतिहास में हुए बड़ी संख्या में धर्म व मत प्रवर्तकों को महापुरुष कहा जा सकता हैं परन्तु हमें यह ज्ञान होना चाहिये कि मनुष्य व महापुरुषों काक आत्मा एकदेशी व जन्म–मरण धर्मा होने से अल्पज्ञ होता है और साथ ही कुछ दुर्बलताओं से घिरा हुआ भी होता है। मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठने के लिये वेदज्ञान, योग व परजन्म को आधार बनाना पड़ता है। यदि मनुष्य के पास वेद ज्ञान, योग ज्ञान व उसका अभ्यास तथा परजन्म में हमारे इस जन्म के कर्मों की भूमिका विषयक यथार्थ ज्ञान नहीं होगा तो मनुष्य कुछ गुणों के कारण कितना भी बड़ा क्यों न बन जाये, उसमें न्यूनतायें एवं दुर्बलतायें रहती हैं व रहेंगी। महर्षि दयानन्द को हम ऋषि, योगी व ब्रह्मचारी मानते हैं जिसका कारण उनके क्षरा प्रचारित विचार व मान्यतायें उनकी अपनी न होकर वेद व पूर्व ऋषियों द्वारा प्रचारित मान्यतायें हैं। इन मान्यताओं को उन्होंने जाना व समझा और उन्हें अपने आचरण में ढालकर दूसरों को भी उनसे लाभ उठाने के लिए उनका प्रचार किया। ऋषि दयानन्द ऐसे विद्वान ऋषि थे जिन्होंने अपनी बातों पर आंखे बन्द करके विश्वास करने को नहीं कहा अपितु सबको उन विचारों का विश्लेषण कर मानने की प्रेरणा की। महाभारत के बादं व ऋषि दयानन्द से पूर्व जितने भी मताचार्य हुए वह ऋषि दयानन्द के समान वेदज्ञान से परिपूर्ण न होने के कारण अनेक बातें ऐसी कर गये हैं जिनसे मनुष्य जाति को कुछ लाभ के साथ अनेक हानियां भी हो रही हैं। इन हानियों को ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि में विस्तार से बताया है। इसमें सबसे मुख्य बात सत्य को जानना और साथ ही कर्म फल विज्ञान को जानना भी है।

सत्य क्या है? सत्य उसे कहते हैं जो यथार्थ व किसी वस्तु व पदार्थ का वास्तविक स्वरूप हो। सत्य किसी पदार्थ की सत्ता को भी कहते हैं। सत्य उन मान्यताओं व सिद्धान्तों को भी कहते हैं जिन पर चलकर हमारा उत्कर्ष व उन्नति होती हो और हमारे कारण किसी प्राणी को क्लेश व किंचित भी दुख न होता हो। मनुष्य का कर्तव्य अपनी शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति करना तो है ही, इसके लिए उसे जिन साधनों का सहारा व उपयोग करना होता है वह ऐसे होने चाहिये जिन्हें समाज व देश के सत्य पर आधारित नियमों की स्वीकृति प्राप्त हो। शास्त्रों का सार है कि मनुष्य को सत्य बोलना व उसका ही आचरण करना चाहिये। सत्य बोलना व उसका आचरण करना ही वस्तुतः धर्म व मनुष्य का कर्तव्य है। मनुष्य का अपना कर्तव्य तो है ही कि वह सदा सत्य बोले व सत्य का व्यवहार करे। इसके साथ ऋषि दयानन्द ने यह भी जोड़ा है कि सत्य को मानना व मनवाना भी प्रत्येक सज्जन मनुष्य का धर्म वा कर्तव्य है। किसी एक व अधिक मनुष्यों के सत्य को मानने व आचरण करने से ही समाज व देश में सुख व शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती। इसके लिए दूसरों से उस सत्य को मनवाना भी सत्य धर्म के पालन करने वालों के आवश्यक व अनिवार्य है। हमने यही गलती की है कि हम आर्यसमाज के ऋषि भक्त स्वयं तो सत्य को मानते व उसका यथाशक्ति पालन करते हैं, परन्तु हमने सत्य का उचित रीति से प्रचार नहीं किया और न दूसरों से सत्य को मनवाने के प्रयत्न ही किये। यही कारण है कि आज सर्वत्र सत्य के विपरीत असत्य का प्रचार व प्रभाव तथा उसका व्यवहार का होना देख रहे हैं।

सत्य का ज्ञान वेदों व वैदिक साहित्य के स्वाध्याय, विद्वानों के प्रवचनों के श्रवण व उनके देश देशान्तर में प्रचार से होता है। हमारे विद्वान आर्यसमाज की चार दीवारी में आर्यसमाज के कुछ सदस्यों में जाकर ही अपनी बातें कहते हैं। यह पीसे हुए को पीसना ही कह सकते हैं। आज स्थिति यह हो गयी है कि आर्य परिवारों की सन्तानें भी आर्यसमाज के सिद्धान्तों से पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। जो कुछ हैं भी वह भी आधुनिक पश्चिमी जीवन शैली के अभ्यस्त हो रहे हैं। राष्ट्रीय विषयों व समस्याओं का उन्हें न तो ज्ञान होता है न ही उसके लिए वह कुछ करते हैं। हमारी धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के लिए विगत 1200 वर्षों से अधिक समय से प्रयत्न हो रहे हैं। विश्व में हमारी जनसंख्या निरन्तर कम होती गयी है, परन्तु ऋषि दयानन्द व उनके बाद की प्रथम पीढ़ी के लोगों के अतिरिक्त वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा का कोई प्रयास अन्य किसी के द्वारा हुआ हो, स्मरण नहीं होता। हमारे अपने ही संगठन में कुछ विधर्मियों के शुभ चिन्तक हैं जिनकी उपस्थिति

हमें कमजोर बना रही है। वैदिक धर्म व संस्कृति के भविष्य के लिए आज का समय एक बहुत बड़ी चुनौती है। क्या हमारे धर्म व संस्कृति का भविष्य सुरक्षित है? इतिहास पर दृष्टि डालकर जब इसका उत्तर खोजते हैं तो वह हां में न मिलने से पीड़ा होती है। अतः हमें अपनों में तो वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार करना ही है इसके साथ जो हमारे निकट हैं, पौराणिक व सनातनी हैं, दलित व पिछड़े हैं, ग्रामों, पर्वतों व वनों में रहते हैं, उन तक भी हमें अपने विचारों व सिद्धान्तों को पहुंचाना है और उन्हें बताना है कि किस प्रकार से उनके जन्म–जन्मान्तर में अभ्युदय व निःश्रेयस वैदिक धर्म व संस्कृति को अपनाकर व उसका प्रचार कर ही प्राप्त हो सकता है।

हमारे सिद्धान्त सत्य हैं अतः हमें इनके प्रचार में सफलता मिलनी चाहिये। इसके लिए पुरुषार्थ अपेक्षित है जिसकी हमें अपने नेताओं, विद्वानों व कार्यकर्ताओं में कहीं कुछ कमी प्रतीत होती है। जब दूसरे मत के प्रचारक अपनी अविद्यायुक्त बातों का प्रचार कर अपनी संख्या को निरन्तर बढ़ा सकते हैं, तो हमें सत्य का प्रचार कर अपनी संख्या को बढ़ाने कठिनाई नहीं होनी चाहिये। इसके लिए हमें लगता है कि हम महीने में एक या दो रविवारों को आर्यसमाज में सत्संग आदि करें व दो रविवारों को आर्यसमाज से बाहर दलित बस्तियों व गांवों की बस्तियों आदि में जाकर अपना सत्संग कर लोगों से जनसम्पर्क व साहित्य वितरण कर उन्हें वेदों व आर्यसमाज से जोड़ने का प्रयास करें। इससे आर्यसमाज को किसी प्रकार से हानि तो कुछ होनी नहीं है। बहुत से वृद्ध, युवा व बच्चे इससे प्रभावित हो सकते हैं। कुछ अति निर्धन बच्चों की दसवीं, बारहवीं व स्नातकीय शिक्षा की व्यवस्था भी आर्यसमाज व अपने धनिक सदस्यों से करा सकता है। इसका कुछ तो लाभ होगा ही। आर्यसमाज के विद्वान व ऋषि भक्त आचार्य आशीष जी का सुझाव है जिसके अनुसार आर्यसमाजों में दलित व निर्धन बच्चों को उनके स्कूल का होमवर्क कराने का अभियान चलाना चाहिये। इससे उन बच्चों के परिवार के अन्य लोग भी आर्यसमाज से जुड़कर समाज की शक्ति बन सकते हैं। जो भी उचित हो विद्वान उसका निर्धारण कर सकते हैं। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि आर्यसमाजों में गुटबाजी पूरी तरह से समाप्त होनी चाहिये। जब तक ऐसा नहीं होगा, आर्यसमाज के अपने सदस्य व उनके परिवार के लोग भी आर्यसमाज नहीं आयेंगे और इसका परिणाम हमने यह देखा है कि आर्य परिवारों की युवा पीढ़ी आर्यसमाज से दूर हो जाती है। देहरादून में ही अनेक आर्य परिवारों को देखते हैं जिनकी युवापीढ़ी कभी आर्यसमाज में नहीं जाती है। यह निराशा पैदा करता है।

वेद सब सत्याओं की पुस्तक है। आर्यसमाज इस सिद्धान्त व मान्यता को मानता है। वेद की प्रत्येक बात सत्य है और उसका प्रचार करना ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद प्रचार भी सत्य का प्रचार होने के कारण से धर्म है व सभी मनुष्यों का कर्तव्य है। धर्म व कर्तव्य पालन ही वस्तुतः यज्ञ है। यदि हम अग्निहोत्र व वेदपारायण यज्ञों के साथ वैदिक धर्म की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार का कार्य भी करते हैं तो यह भी एक यज्ञ व महायज्ञ है। आज के युग में इसकी सर्वाधिक आवश्यकता व प्रासंगिकता है। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा वैदिक धर्म व संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकेगी। हमारे विरोधी हमारे धर्म व संस्कृति को निरन्तर हानि पहुंचा रहे हैं और हम नगरों में बैठ कर गांवों, वनों व दूर दराज के लोगों के धर्म परिवर्तन के कृत्यों से सर्वथा अनभिज्ञ रहते हैं। हमारा निजी दृष्टिकोण है कि हमारे आरएसएस व विश्व हिन्दू परिषद आदि की ओर से ग्रामीण व वनांचलों में इस पर अधिक नहीं तो कुछ नजर रखी जाती है। यह संगठन कमजोर लोगों के दूर–दराज के स्थानों पर अपनी विचारधारा के अनुसार जन जागरण करते हैं। हमें उनके साथ मिलकर, परस्पर सहयोग से या पृथक से अपने दलितों व निर्धन भाईयों को अपने धर्म पर अडिग रखने के प्रयत्न करने चाहियें।

आर्यसमाज का इतिहास अब डेढ़ शताब्दी पुराना हो चुका है। हमें विदेशी व अन्य षडयन्त्रों को असफल कर यदि अपने धर्म व संस्कृति को सुरक्षित रखना है तो हमें नयी ऊर्जा व उत्साह से प्रचार करना होगा और अपने हिन्दू बन्धुओं को भी षडयन्त्रों का ज्ञान कराना होगा। हमारे अपने जीवन में अनेक पौराणिक बन्धु मित्र बने व अब भी हैं। वह हमारी भावनाओं व विचारों को अच्छी प्रकार से जानते हैं। उनका हमसे कोई विरोध नहीं है। हम उन्हें अपनी बात कहते हैं जिन्हें वह प्रेमपूर्वक सुनते हैं। इतना होने पर भी अविद्या को हटना इतना आसान भी नहीं है। यह प्रसन्नता की बात है कि आज समाज में विभिन्न जन्मना जातियों में परस्पर विवाह आदि होने लगे हैं और तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे लोग निकट आ रहे हैं। यह आज के समय में एक शुभ संकेत है। आर्यसमाज को धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए देश में सर्वत्र सत्य धर्म प्रचार का एक आन्दोलन करना होगा। यदि हमें इस कार्य में कुछ सफलता मिलती है तो इससे हमारी भावी पीढ़ियां शायद अपने धर्म व संस्कृति में स्थिर रह सकेंगी। हम न तो विद्वान हैं और न ही कार्यकर्ता। इस समय वृद्धावस्था से गुजर रहे हैं परन्तु भविष्य के प्रति हमें अनेक आशंकायें हैं। इसलिये केवल लिखित शब्दों के द्वारा ही प्रचार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उसी श्रृंखला में आज का भी यह लेख लिखा है। आर्यसमाज के विद्वानों व नेताओं को देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार आर्यसमाज को उसके कर्तव्य का बोध कराना चाहिये और उसके लिए सक्षम नेतृत्व प्रदान करना चाहिये।

"वैदिक धर्म का समग्रता से ज्ञान व प्रचार गुरुकुलीय शिक्षा से ही सम्भव"

–मनमोहन कुमार आर्य

गुरुकुल एक लोकप्रिय शब्द है। यह वैदिक शिक्षा पद्धति का द्योतक शब्द है। वैदिक धर्म व संस्कृति का आधार ग्रन्थ वेद है। वेद चार हैं जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। यह चार वेद सृष्टि के आरम्भ में सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अनादि, अनन्त, न्यायकारी, सृष्टिकर्ता और जीवों के कर्मानुसार उन्हें सुख दुःख व मनुष्यादि जन्म देने वाले ईश्वर से चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को प्राप्त हुए थे। वेद ईश्वर की अपनी भाषा संस्कृत में हैं जो लौकिक संस्कृत से भिन्न है और जिसके शब्द व पद रूढ़ न होकर योगरूढ़ हैं। वेदों को जानने व समझने के लिए वैदिक संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है और इसके लिए वर्णोच्चारण शिक्षा सहित व्याकरण के अष्टाध्यायी व महाभाष्य आदि ग्रन्थों का बाल व युवावस्था में लगभग तीन वर्ष तक अध्ययन करना व कराना आवश्यक है। यह अध्ययन किसी एक गुरु से किया जा सकता है। प्राचीन काल में वेदों के विद्वान जिन्हें ब्राह्मण कहा जाता था, वह शिक्षा व व्याकरण आदि का ज्ञान वनों में स्थित अपने गुरुकुल, अर्थात् गुरु के कुल, में कराया करते थे जहां अनेक विद्यार्थी एक गुरु से व्याकरण व उसके बाद निरुक्त आदि वेदांगों व उपांगों आदि अनेक ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन करते थे। यह परम्परा महाभारत के बाद यवन व अंग्रेजों के समय में भंग कर दी गई थी जिसका उद्देश्य वैदिक धर्म व संस्कृति को समाप्त कर विदेशी मतों को महिमा मण्डित करना था। इसका उद्देश्य लोगों का येन केन प्रकारेण धर्मान्तरण व मतान्तरण करना मुख्य था। इस कारण दिन प्रति दिन वैदिक धर्म व संस्कृति का पतन हो रहा था। महर्षि दयानन्द ने इस स्थिति को यथार्थ रूप में समझा था और संस्कृत का अध्ययन कराने के लिए एक के बाद दूसरी कई संस्कृत पाठशालाओं का अलग अलग स्थानों पर स्थापन किया था। किन्हीं कारणों से इन पाठशालाओं को आशा के अनुरुप सफलता न मिलने पर उन्हें बन्द करना पड़ा तथापि ऋषि दयानन्द ने जहां एक ओर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय व ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य आदि का प्रणयन किया वहीं उन्होंने व्यापकरण पर भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखकर अपने अनुयायियों का गुरुकुल स्थापित कर संस्कृत व वेदादि ग्रन्थों के पठन पाठन का मार्ग प्रशस्त किया था।

ऋषि दयानन्द धर्मवेत्ता एवं समाज सुधारक सहित सच्चे देशभक्त, ऋषि, योगी व समस्त वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान थे। उन्होंने वैदिक धर्म व इसकी मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के प्रचार सहित समाज सुधार का अभूतपूर्व कार्य किया। ३० अक्टूबर, सन् १८८३ को विष देकर उनकी हत्या कर वा करा दी गई जिस कारण वह अपनी भावी योजनाओं को पूर्ण न कर सके। यदि वह कुछ वर्ष और जीवित रहते तो वेदभाष्य का कार्य पूर्ण करने सहित गुरुकुलों की स्थापना कर अपने जैसे वैदिक धर्म के प्रचारक तैयार करने का प्रयत्न अवश्य करते। उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने सत्यार्थ प्रकाश आदि उनके ग्रन्थों में शिक्षा विषयक विचारों को क्रियान्वित करने के लिए शिक्षण संस्था की स्थापना का कार्य किया। इसे दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल नाम दिया गया था जो बाद में एक वट वृक्ष बना और कहा जाता है कि सरकारी स्कूलों के बाद यही देश के सर्वाधिक लोगों को शिक्षित करने वाली सबसे बड़ी शिक्षण संस्था है। किन्हीं कारणों से दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज में संस्कृत को वह स्थान न मिला जिसकी की वहां आवश्यकता थी और जिसका समर्थन स्वामी दयानन्द जी के विचारों से होता था।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा व इस सभा के प्रमुख सर्वप्रिय नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् १९०२ में हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में एक गुरुकुल की

स्थापना की जहां संस्कृत व्याकरण व भाषा का ज्ञान कराने के साथ वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन भी कराया जाता था। यह गुरुकुल कांगड़ी अपने समय में विश्व में विख्यात हुआ। इस शिक्षण संस्था में उन दिनों के भारत के वायसराय आये और इंग्लैण्ड के भावी प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड भी यहां आये थे। इस गुरुकुल से संस्कृत भाषा के निष्णात अनेक स्नातक बने जिन्होंने समाज व देश में अपनी विद्या का लोहा मनवाया। कुछ पत्रकार बने तो कुछ वेदाचार्य वा धर्माचार्य, कुछ इतिहासकार तो कुछ नेता व सांसद बने। संस्कृत व हिन्दी भाषा के अध्यापन के क्षेत्र में तो अनेक स्नातकों ने अपनी सेवायें दी जिससे संस्कृत व हिन्दी का देश भर में प्रचार हुआ। समय के साथ साथ देश भर में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायियों ने गुरुकुलों की स्थापना की और वहां संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन कराया जिससे देश व समाज को वैदिक विद्वान व अध्यापक- प्राध्यापक मिलते आ रहे हैं। आर्यसमाज में अधिकांश पुरोहित भी हमारे गुरुकुलों के ही शिक्षित युवक होते हैं। स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण आदि भी विश्व प्रसिद्ध हस्तियां हैं जो आर्यसमाज के गुरुकुलों गुरुकुल खानपुर वा कालवां की देन हैं। यह गुरुकुल आन्दोलन निरन्तर आगे बढ़ रहा है। इसके मार्ग में अनेक कठिनाईयां भी हैं जिस पर गुरुकुलों के आचार्यों व हमारी सभाओं के नेताओं को मिलकर विचार करना चाहिये और उसके समाधान का निश्चय कर उसे क्रियान्वित करने के प्रयास भी करने चाहियें।

गुरुकुलों से प्रतिवर्ष हमें व्याकरणाचार्य व धर्माचार्य मिलते रहते हैं परन्तु आर्यसमाज में उन्हें उचित दक्षिणा व वेतन पर कार्य नहीं मिलता। इसका परिणाम यह होता है कि वह अपनी आजीविका के लिए महाविद्यालयों व अन्य सरकारी संस्थाओं की ओर अपनी दृष्टि डालते हैं। उनमें जो योग्यतम होते हैं वह महाविद्यालायों एवं अन्य अच्छी सरकारी सेवाओं में चले जाते हैं। इससे आर्यसमाज व वैदिक धर्म उनकी सेवाओं से वंचित हो जाता है और वह प्रयोजन भी पूर्ण नहीं होता जिसके लिए गुरुकुल ने उन्हें तैयार किया था। इसमें दोष गुरुकुलों के स्नातकों का कम आर्यसमाज व इसकी सभा संस्थाओं व नेताओं का है जो इन्हें आर्यसमाज के कार्यों में उचित वेतन व दक्षिणा पर नियुक्ति नहीं दे पातीं। ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं कि स्नातक बन कर अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेने पर सरकारी सेवाओं में कार्यरत हमारे गुरुकुल के स्नातक दो-चार व अधिक घंटे नियमित रूप से गुरूकुल व आर्यसमाज रूपी माता का ऋण चुकाने के लिए कार्य करते हों और इसके अन्तर्गत शोध, लेखान व निःशुल्क रूप से मौखिक प्रचार आदि करते हों। आज का भारतीय समाज उच्च मानवीय मूल्यों के ह्रास का शिकार है। इसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि हमारे मार्गप्रदर्शक व आदर्श बन सकते हैं। सभी स्नातकों से तो हम अपेक्षा नहीं कर सकते परन्तु योग्य विद्वानों का यह कर्तव्य है कि उन्होंने गुरुकुल व आर्यसमाज के सहयोग से जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका कुछ लाभ वह गुरुकुल व आर्यसमाज को भी प्रदान करें। गुरुकुलों के सभी समर्थ स्नातकों को इसका ध्यान रखना चाहिये।

हमें इस समस्या पर भी विचार करना चाहिये कि हम गुरुकुल के योग्य व योग्यतम आचार्यों को उचित दक्षिणा दें। यह तभी सम्भव होगा जब गुरुकुल के पास पर्याप्त साधन व धन हो। इतनी दक्षिणा तो मिलनी ही चाहिये कि जिससे आचार्य व उसके परिवार का आज की परिस्थितियों में भोजन व सन्तानों की शिक्षा आदि का निर्वाह हो सके। हमें लगभग २० वर्ष पूर्व वृन्दावन व अनेक स्थानों पर जाने का अवसर मिला। हमने वहां देखा कि हमारे आचार्यों को बहुत न्यून वेतन मिलता है। इससे हमें लगता है कि भविष्य में हमारे सभी गुरुकुलों को योग्य आचार्य शायद हीं मिलें। एक बार श्री आदित्य मुनि जी ने भोपाल से प्रकाशित सभा की पत्रिका में अपने सम्पादकीय लेख में किसी गुरुकुल में आचार्यों के वेतन की समस्या पर प्रकाश डालते हुए टिप्पणी की थी कि वहां आचार्यों को वेतन बहुत ही कम मिलता है। उन्होंने यह भी लिखा था कि जितना वेतन होगा वैसा ही वहां शिक्षा का स्तर भी होगा। हम चाहते हैं कि समय समय पर हमारे गुरुकुलों के आचार्यों व आर्य नेताओं की जो बैठक व गोष्ठी

हो, उनमें इस समस्या पर भी विचार हो।

आर्य समाज की सभाओं को यह भी प्रयास करने चाहिये कि उनके सभी गुरुकुल परस्पर एक दूसरे से एक परिवार की तरह जुड़े हुए हों। एक गुरुकुल में यदि कोई समस्या आये तो अन्य गुरुकुल, आर्य समाज व सभायें उनका सहयोग करें। सभी गुरुकुलों का पाठ्यक्रम भी समान होना चाहिये। सर्वत्र ऋषि प्रणीत पाठविधि व आर्ष ग्रन्थों का ही पठन पाठन हो। आर्यसमाज के सदस्य व धनिक लोग ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों व पाठ विधि पर चलने वाले गुरुकुलों व उनके आचार्यों को उचित साधन उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहें। वर्तमान समय में आर्य समाज की विचारधारा व पाठविधि के कितने गुरुकुल देश भर में चल रहे हैं, इसका डेटा व जानकारी किसी एक केन्द्रीय स्थान पर होनी चाहिये जिससे उन गुरुकुलों, आचार्यों व ब्रह्मचारियों आदि की संख्या का अनुमान आर्य समाज के सुधी सदस्यों व नेताओं को हो सके। आज हमें पता नहीं कि देश में कुल कितने गुरुकुल चल रहें हैं और वहां लगभग कितने ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त करते हैं ? उन गुरुकुलों की स्थापना कब व किसके द्वारा हुई ? उनके पास साधनों की स्थिति कैसी है ? यह भी नहीं पता कि उन गुरुकुलों से अब तक कितने स्नातक बनें और वह कहां क्या कार्य करते हैं ? उनमें से कितने आर्यसमाज को अपनी सेवाओं से कृतार्थ कर रहे हैं व आर्य समाज से जुड़े हैं। अतः हमारे गुरुकुलों के संयुक्त सम्मेलनों में समय समय पर इन विषयों पर भी विचार होना चाहिये। ऐसे अनेक प्रश्न और हो सकते हैं जिन्हें गुरुकुलों के परस्पर सम्मेलनों में सम्मुख रखा जाना चाहिये और जहां आवश्यकता हो वहां सुधार पर विचार किया जाना चाहिये।

लेख को विराम देने से पूर्व हम यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि वर्तमान समय में आर्य समाज की सभाओं की शक्ति बिखरी हुई व असंगठित है जिससे आर्यसमाज को अपार हानि हो रही है। यदि यह विघटन जारी रहा तो इससे आर्यसमाज की बहुत हानि हुई है और भविष्य में और अधिक होगी। आने वाली पीढ़िया हमें क्षमा नहीं करेंगी। अतः आर्य समाज के सभी नेताओं, अधिकारियों व आर्य समाज के सुधी सदस्यों को इस ओर भी ध्यान देना चाहिये। ईश्वर सबको सद्प्रेरणा करें जिससे संगठन में मतभेद दूर हो सकें।

दिवंगत समाज सेवी केशवराव जी जाधव को श्रद्धांजलि

मानवाधिकारों के लिए निरंतर संघर्षरत, तेलंगाना आंदोलन के प्रमुख योद्धा, क्रान्तिकारी विचारक और शिक्षाविद् प्रो. केशवराव जी जाधव का गत १६ जून २०१८ को निधन हो गया। पिछले कई दिनों से वे अस्वस्थ थे। शवयात्रा में जाधव जी के अनुयायी, सामाजिक व राजनैतिक नेता व सगे-सम्बन्धियों ने भारी संख्या में भाग लेकर भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की। अंबरपेट श्मशान वाटिका में वैदिक पद्धति से अत्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ। जाधव जी ने शैक्षिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। जन आन्दोलनो में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें जेल की यातनाएँ भी झेलनी पड़ी।

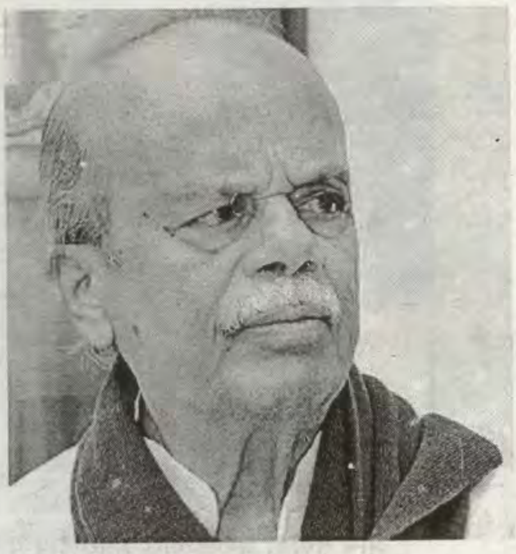

प्रो. केशवराव जाधव

आर्य समाज की गतिविधियों में भी उनका विशेष योगदान रहा। उनके निधन से समाज और विशेषकर तेलंगाना प्रान्त की अपूरणीय क्षति हुई है। आर्य प्रतिनिधि सभा उन्हें सादर श्रद्धांजलि समर्पित करती है। परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति और सद्गति प्रदान करें। साथ ही उनकी शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। -आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना

अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ

-पारुल चतुर्वेदी

खोल के मनचाही किताब के पन्ने
पढ़ते-पढ़ते ही सेने लगा हूँ
शायद लोग सही कहते हैं
अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ

पहले सी फुर्ती नहीं बदन में
दो कदम चलने से थकने लगा हूँ
गिनी हुई साँसें हैं बांकी
एक-एक की खींच के लेने लगा हूँ

आँखों से कम हो गया है दिखना
कुछ ऊँचा भी अब सुनने लगा हूँ
भक नहीं लगती अब उतनी
ज़िदा रहने को बस दाने चुगने लगा हूँ

प्यार तो पहले भी करता था सबसे
अब जाहिर भी करने लगा हूँ
वक्त मिले न मिले कहने का
इसलिये अब सब कुछ कहने लगा हूँ

मन में जितने उद्गार भरे थे
आँखों से खाली करने लगा हूँ
फ़िर-फ़िर जो आँसू आते हैं
उन्हें आँखों की ख़राबी कहने लगा हूँ

शरीर साथ नहीं देता अब
मनोबल से उसको ढोने लगा हूँ
पता नहीं लगने देता पर
अंदर से तो दुर्बल होने लगा हूँ

उम्र जो ढलने लगी है मेरी
गलतियाँ अपनी गिनने लगा हूँ
साफी तो माँग नहीं सकता पर
उन पर पछतावा करने लगा हूँ

सब अपने अब मेरे पास रहें
ऐसी कामना करने लगा हूँ
वक्त अब मेरे पास जो कम है
देख-देख के सबकी जी भरने लगा हूँ

जाना तो इक दिन है सबको, पर बिस्तर पे
पड़ने से डरने लगा हूँ
चलते चलते चला जाऊँ बस
यही प्रार्थना करने लगा हूँ

खोल के मनचाही किताब के पन्ने
पढ़ते-पढ़ते ही सोने लगा हूँ
शायद लोग सही कहते हैं
अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ
अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ ।।

किस्सा कुछ यूं था

कांग्रेस नहीं, स्वामी दयानंद का मूल विचार था स्वदेशी आंदोलन

भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलाने के लिए किए गए आंदोलनों में महात्मा गांधी की प्रेरणा से चले 'असहयोग आंदोलन' को प्रमुखता से याद किया जाता है। मगर इतिहास लेखकों ने यह कभी नहीं बताया कि अंग्रेजों द्वारा बनाई गई वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का मूल विचार कांग्रेस या महात्मा गांधी का नहीं, बल्कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का था। स्वामीजी ने सन् 1875 में ही स्वदेशी आंदोलन की नींव रखते हुए भारतीय सामग्री के उपयोग का विचार दिया था।

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब देशभर में अंग्रेजों के खिलाफ आक्रोश था, उसी दौर में स्वामी दयानंद ने लोगों को अंग्रेजों की आर्थिक कमर तोड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कई लेख लिखे, लोगों को स्वदेशी का महत्व बताया और अंग्रेजों की वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए तैयार किया। फिर 1875 में उन्होंने पहले आर्य समाज और फिर पूरे देश को स्वदेशी कपड़े ही पहनने व स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करने को कहा। यह आंदोलन कुछ ही समय में देशभर में व्याप्त हो गया।

स्वदेशी आंदोलन की सफलता के सालों बाद सन् 1920 के आसपास कांग्रेस ने इसे 'असहयोग आंदोलन' के नाम से चलाया। बाद में इसे इस तरह प्रचारित किया गया जैसे 'स्वदेशी आंदोलन' का मूल विचार कांग्रेस का था, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था।

आर्य समाज, ध्रुवपेट द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मनाया गया कार्यक्रम में भाग लेते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह, आर्य समाज ध्रुवपेट के प्रधान ठा. राजकुंवर सिंह, योग प्रशिक्षक ठा. गोविंद सिंह एवं अन्य

ओ३म् साम्प्रदायिक नहीं है

-खुशाल चन्द्र आर्य

लाखों नहीं करोड़ों वर्षों तक इस पूरी धरती पर सिर्फ एक ही जाति "आर्य" (श्रेष्ठ) थी और उनका उपास्य देव सिर्फ "ओ३म्" ही था।

यह तो पूरा विश्व मानता है कि वेद संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तभी चारों वेद्र जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं जो क्रमशः ज्ञान, कर्म उपासना और विज्ञान के ग्रन्थ हैं और चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे, क्रमशः उनके मुखे से चारों वेद उच्चारित करवाये। इसीलिए वेद ईवरीय ज्ञान कहलाता है। ईश्वर ने यह सारी सृष्टि मनुष्य के लिए बनाई है कारण मनुष्य उसकी सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि व अन्तिम कृति है। इसीलिए मनुष्य को अन्य योनियों की वनिस्वत बुद्धि विशेष दी है। इन्य योनियाँ जैसे पशु-पक्षी, कीट-पतंग सिर्फ भोग योनि हैं। इनको सिर्फ पूर्व जन्म के कर्मों को भोगने के लिए ही जन्म मिलता है इनके किये स्वाभाविक (जो ईश्वर प्रदत्त है) कर्मों का उन्हें कोई फल नहीं मिलता। मनुष्य कर्म और भोग दोनों योनि है परन्तु यह कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है इसीलिए इसको नैमित्तिक (जो किसी के सीखाने से सीखा जाता है) किये कर्मों का फल मिलता है और इसी योनि में जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। यहाँ यह लिखना बहुत जरूरी है कि जैसे ईश्वर ने मनुष्य को आँखों से देखने के लिए सूर्य (अग्नि) कानों से सुनने के लिए आकाश, नाक से सूँघने के लिए पृथ्वी, जिह्वा से चखने के लिए पानी और त्वचा से स्पर्श के लिए हवा बनाई है उसी भाँति बुद्धि के विकास के लिए वेद ज्ञान दिया है। इस वेद ज्ञान द्वारा ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यह शिक्षा व उपदेश दिया है कि तुम अपने पूरे जीवन में स्वयं सुखी रह सको और दूसरों को भी सुखी बना सको। साथ ही तुम्हारा अन्तिम लक्ष्य जो मुक्ति को प्राप्त करना है वह कैसे प्राप्त कर सकते हो, यह बताया है और वेदों में ही ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यह भी आदेश दिया है कि **"ओ३म् क्रतेस्मर"** है जीव। तू ओ३म" का स्मरण कर। ईश्वर ने यह आदेश कोई अपनी स्तुति व प्रशंसा के लिए नहीं बल्कि मनुष्यों की भलाई के लिए दिया इससे मनुष्य के मन में आत्म सन्तुष्टि के साथ-साथ आत्मबल भी बढ़ता है और उसे अपने कृतज्ञता भाव की पूर्ति की अनुभूति होती है जिससे उसके जीवन में नवशक्ति का संचार होता है। उस समय वेद ज्ञान यानि वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई धर्म मत, पंथ व सम्प्रदाय नहीं थे। इसलिए वेद के आदेशानुसार हर स्त्री-पुरुषों को ओ३म् का जाप करना चाहिए। यह नाम पूर्ण वैज्ञानिक है। इसके नाम की ध्वनि नाभि से उठती है और कण्ठ तक आती है, यह नाम सबसे लम्बे स्वर में लिया जा सकता है। इसके नाम से पूरे शरीर में कम्पन्न का अनुभव होता है जिससे हमारे शरीर की सभी नस-नाडियाँ खुल जाती है। ओ३म् के नाम को जपने से जो आन्द आता है वह आनन्द अनय नाम राम, कृष्ण, शिव ईश्वा अल्लाह व गॉड के नामों में नहीं आता इसलिए ओ३म् का जप करना ही उपयुक्त है इसको किसी एक धर्म से जोड़कर इसे साम्प्रदायिक नहीं बनाना चाहिए।

लाखों नहीं करोड़ों वर्षों तक इस पूरी धरती पर सिर्फ एक ही जाति "आर्य" (श्रेष्ठ) थी और उनका उपास्य देव सिर्फ "ओ३म्" ही था। वे ओ३म् की ही स्त्रद्धया हवन व अष्टांग योग द्वारा उपासना करते हुए अपने मन, बुद्धि, चित्त को एकाग्र करके समाधिस्त होकर ईश्वर के सानिध्य में बैठकर अपार आनन्द की अनुभूति करते थे। जिस प्रकार आँख का गुण रूप, नाक का गुण गन्ध, कान का गुण शब्द, जिह्वा का गुण स्वाद, त्वचा का गुण स्पर्श है उसी प्रकार ईश्वर का गुण आनन्द है। इसी की प्राप्ति के लिए मनुष्य "ओ३म्" की उपासना करता है। इसीलिए वेदों के अधिकतर मन्त्रों से पहले "ओ३म्" का प्रयोग किया गया है जिससे ओ३म् का पठन-पाठन बना रहे। अब समझना यह है कि हमने वेदों में आये अन्य ग्रह-उपग्र पदार्थ वे सम्बन्धों को उसी रूप में मानते हैं जैसा वेदों में वर्मित है। जैसे **"ओ३म् स्वास्ति पंथामनु चरेम सूर्या मसाविव"**। अर्थ- हम सूर्य, चन्द्रमा के समान निरन्तर कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। इसमें सूर्य और चन्द्रमा का वर्णन जैसा वेदों में है उसे आज भी उसी रूप में मानते हैं नाम चाहे किसी ने सूर्य का सन् (SUN) और चन्द्रमा का मून (MOON) रख दिया हो। यदि हम उनसे पूछे तो वे इन्हीं सूर्य और चन्द्रमा की ओर ही संकेत करेंगे। इसी प्रकार-

मा भ्राता भ्रतंर द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रताः बूत्वा वाचं वदत भद्रया॥

अर्थ - भाई-भाई के साथ, बहिन-बहिन के साथ तथा भाई-बहिन परस्पर द्वेष न करें। आपस में सदा ही सुखदायक कल्याणकारी वाणी बोलें। जैसे वेदों में आये सूर्य चनद्रमा किसी धर्म, पंथ, सम्प्रदाय के नहीं है यानि सारे मानव-मात्र के लिए वही सूर्य-चन्द्रमा व बहिन-भाई है तो फिर "ओ३म्" सबके लिए क्यों नहीं ? अर्थात् "ओ३म्" भी पूरे मानव के लिए वही हे जो वेदों में वर्णित है। अब किसी ने उसका नाम ईश्वर, अल्लाह, खुदा या गॉड रख लिया हो इससे "ओ३म्" को मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक सारी धरती पर एक ही जाति "आर्य" एक ही धर्म "वैदिक" और उनका एक ही उपास्य देव "ओ३म्" था। महाभारत के भयंकर युद्ध में विश्व के सभी वैदिक विद्वान चिन्तक योद्धा प्रबुद्ध लोग समाप्त हो जाने से विश्व में वैदिक धर्म का प्रायः ह्रास हो गया और स्वार्थी अज्ञानी, अविद्वान, ब्रह्मणों में परस्पर मतभेद होने से अपनी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अलगृअलग मत, पंथ सम्प्रदाय स्थापित कर लिए जिससे विश्व में अनेको मत-मतान्तर प्रचलित हो गये और उन्होंने अपने-अपने उपास्य देव भी अलग-अलग बना लिए। ईश्व राम, कृष्ण, अल्लाह, गॉड आदि यह सव उसी एक उपास्य देव "ओ३म्" के ही भिन्न-भिन्न नाम है जो अज्ञान-अविद्या व परस्पर की फूट के कारण रखे हुए हैं। यह स्वाभाविक है कि अलग-अलग मत और उपास्य देव होने से वे अपने ही मत को सबसे अच्छा बतलाकर परस्पर लड़ने-झगड़ने लगे और जो वैदिक काल में सारी पृथ्वी के एक कुटुम्ब समझकर सब प्रेमपूर्वक रहते थे और सारा विश्व एक स्वर्गधाम था उसे परस्पर के विरोध ने नर्क बना दिया।

ईश्वर की असीम कृपा से उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने अपने कठिन परिश्रम तप व त्याग के बल पर वेदों का पुनः प्रकाश किया और विश्व को वैदिक धर्म की ओर लाने का अत्यधिक प्रयत्न किया और काफी सफलता भी मिली। महर्षि ने यह विचार करके कि मेरी मृत्यु के बाद भी वैदिक धर्म का प्रचार होता रहे, इस उद्देश्य से सन् १८७५ में आर्य समाज जो एक क्रान्तिकारी, परोपकारी व देश हितैषी संस्था है, उसकी स्थापना मुम्बई में की। उसी आर्य समाज रूपी माता की कोख से अनेकों वैदिक विद्वान, देशभक्त, वलिदानी, क्रान्तिकारी, महापुरुष पैदा हुए जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में बड़ा सहयोग किा और विश्व को वैदिक धर्म की ओर लाने का भरसक प्रयत्न किया। उसी श्रृंकला में आज बाबा रामदेवजी हैं जो हमारे ऋषि मुनियों की जीवन शैली योग, आसन, प्राणायाम जिसके बल पर मनुष्य कम से कम सौ वर्षों तक निरोग रहकर अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जीवित रह सकता है, उस जीवन शैली को हम भूल गये थे, पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे जा रहे थे और अपने प्राचीन गौरव व स्वाभिमन को खो बैठे थे। उन्हें पुनः याद दिलाकर बाबा रामदेव जो गुरुकुलों द्वारा शिक्षित हैं उनको वेद शास्त्रों का पूरा ज्ञान है ही साथ ही योग, आसन, प्राणायाम पर भी पूरा अधिकार है। उन्होंने योग, आसन प्राणायाम का वैदिक शिक्षाओं के साथ-साथ प्रदर्शन करना आरम्भ किया। इनके गुणों और लाभों को विश्व पटल पर प्रदर्शित किया जिससे सारी दुनिया इस ओर आकर्षित हुई और आज पूरा विश्व इसकी ओर दौड़ते हुए आता हुआ दिखाई दे रहा है। बाबा रामदेव उसी परमपिता परमात्मा का मुख्य और निजी नाम "ओ३म्" को ही प्राणायाम करते समय श्वांस, प्रश्वासों में जपने की कहते हैं जिससे मन एकाग्र हो जाने से प्राणायाम में लाभ अधिक पहुँचता है। इसलिए मेरा सभी मत-मतान्तरों के लोगों से करबद्ध निवेदन है कि वे अपने मन में "ओ३म्" के उच्चारण के साथ-साथ प्राणायम करें कारण ओ३म् किसी एक धर्म से बंधा हुआ नहीं है। यह सबका आराध्य देव है। १२ अक्टूबर १९१२ को "आस्था" चैनेल से एक मुस्लिम भाई ने कहा कि बिमारी किसी धर्म से नहीं जुड़ी हुई है, इसलिए वे इलाज भी किसी धर्म से न जोड़कर सबको योग, आसन, प्राणायम करना चाहिए। यह बात उस मुस्लिम भाई की अतिप्रशंसनीय है। यही विचार प्रत्येकमुस्लिम ईसाई व अन्य धर्म वालों को रखनी चाहिए।

नहीं होतीं। उदाहरणार्थ, कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(क) दयानन्द सरस्वती वेदमन्त्रों के अश्लील, परमात्मा के स्वभाव एवं सृष्टिनियम के विरुद्ध और लोकविद्वैषकारी अर्थ कहीं नहीं करते।

(ख) वे वेदों में मांसभक्षण, पशुबलि, जड़पूजा, मृतकश्राद्ध, जादू-टोना, असम्भव चमत्कार आदि नहीं मानते। जिन भाष्यकारों ने इस पक्ष के अर्थ अपने वेदभाष्यों में किये हैं उन्हें वे भ्रान्त ठहराते हैं।

(ग) निर्वचनशास्त्र को भी उनका विशेष योगदान हैं, यतः अपने वेदभाष्य में तथा उणादिकोष की व्याख्या में उन्होंने अनेक नवीन निर्वचन प्रस्तुत किये हैं।

(घ) वे वैदिक शब्दों को व्यापक अर्थों में लेते हैं। यथा देव शब्द से परमेश्वर, विद्वान्, माता, पिता आचार्य, अतिथि, ज्ञानेन्द्रिय आदि का ग्रहण करते हैं। यज्ञ में केवल अग्निहोत्र को ही नहीं, प्रत्युत देवपूजा, संगतिकरण, शिल्प, दान आदि को भी सम्मिलित करते हैं। धनवाचक रै, राधस्, रयि, धन, वसु प्रभति शब्दों से सुवर्ण आदि धन के साथ-साथ विद्या, धर्म, आरोग्य, चक्रवर्ती राज्य, मोक्ष आदि धन को भी गृहीत करते है। रश्मि आदि किरणवाची शब्दों से केवल भौतिक प्रकाश की किरणों को ही नहीं, अपितु विद्या-विज्ञान के तेजों एवं अन्तः प्रकाशक गुणों का भी बोध कराते हैं। रथ शब्द का प्रायः सर्वत्र ही भूयान, जलयान एवं विमान अर्थ लेते हैं। यही स्थिति वृत्र, वृक, नमुचि, नदी, धनुष, इषु आदि अन्य अनेक शब्दों की भी है।

(ङ) उनका वेदभाष्य मानव को अभ्युदय तथा निःश्रेयस दोनों की प्राप्ति के लिए उद्बोधन देता है। लौकिक उत्कर्ष में वे समग्र भूमण्डल के धर्मपूर्ण चक्रवर्ती राज्य तक पहुँचाते हैं, तो दिव्य उत्कर्ष में मोक्ष के परमानन्द तक ले जाते हैं।

इस प्रकार अनेक नवीनताओं एवं विशेषताओंके कारण स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य अत्यन्त उपादेय है।

వైదికసామ్యవాదము

(VEDIC SOCIALISM)

వేదాలు సామ్యవాదాన్ని సమర్థిస్తున్నాయి. సామ్యము అంటే సమత్వము - సమానత, పోలిక అనే అర్థాలున్నాయి మానవుల్లో సమత్వ సాంఘిక వ్యవస్థను బోధించే వాదం సామ్యవాదం అనబడుతుంది. వేదాల్లో సామ్యవాద పాఠాల్ని నేర్పే మంత్రాలెన్నో ఉన్నాయి. ప్రపంచంలో గల ఉత్తమ ఆలోచనలు, సుందరవాదాలు, దివ్యభావాలు, వేదాలనుండే వచ్చినవని చెప్పవచ్చును ఇందుకు కారణం అన్నిధర్మాలకు ఆదిస్రోతస్సు - (నది) వేదమే కనుక. అసత్య సిద్ధాంతాలు, తల, తోకలేని వాదాలు, మానవుని అధోగతికి ప్రేరేపించు భావాలు మానవులు కల్పించినవే. విశ్వ గ్రంథాలయంలో మొదట ప్రవేశించిన గ్రంథం వేదమే. అందుచేత 'కార్ల్‌మార్క్స్' బోధించిన సామ్యవాద సిద్ధాంతాలు వేదాలనుండి గ్రహించినవే. కాని అందులో తాను కల్పించిన విషయాలుండడం చేత వైదిక సామ్యవాదం వికారరూపాన్ని ధరించింది. గంగాజలం యొక్క నిర్మలత్వాన్ని చూడాలను కుంటే గంగోత్రి (గంగ పుట్టిన చోటు) వద్దనే చూడగలం. అదేవిధంగా సామ్యవాదం యొక్క నిజ స్వరూపాన్ని చూడాలంటే వేదాలను వెదకినపుడే చూడగలం.

కార్ల్‌మార్క్స్ తన సామ్యవాద సిద్ధాంతంలో ఆర్థిక, సాంఘిక సమత్వాన్ని మానవుల్లో సాధించాలని బోధించగా వేదం ఆర్థిక, సాంఘిక సమత్వాలతోబాటు ఏకేశ్వరో పాసనను (ఒక్కభగవంతుని ఉపాసించడం) కూడ మానవులకు బోధించింది కార్ల్‌మార్క్స్ భవంతుని, భగవదుపాసనను గురించిగాని పట్టించుకోలేదు. నాస్తిక్యం వైపు మొగ్గాడు. మానవుల్లో సహజంగా ఉండే భగవదుపాసనా ప్రవృత్తిని పట్టించుకోలేదు. అందలకనే మార్క్స్ సిద్ధాంతాన్ని అమలుపరచిన రష్యాలోను తదితర కమ్యూనిస్ట్ దేశాల్లోను 'మార్క్సిజమ్' విఫలమయింది. క్రొత్తక్రొత్త ప్రభుత్వాలు ఏర్పడ్డాయి. మార్క్స్ చెప్పినసిద్ధాంతానికి భిన్నంగా వైదిక సామ్యవాదాన్ని బోధించే కొన్ని మంత్రాల నిట ఉదాహరిస్తాను.

బ్యాయ స్వస్తశ్చిత్తినో మా వి యోష్ట
సం రాధయన్తః సధురాశ్చరన్తః।
అన్యో అన్యస్మైవల్గు వదన్త ఏత
సధ్రీ చీనాన్వః సం మనస స్కృణోమి ॥
-అథర్వ. 3-30

ఓ మానవులారా ! మీరు ఒకరిని మించి మరొకరు శ్రేష్ఠగుణ సంపన్నులై,సమానచిత్తం గలవారై కార్యసాధనలోసమానభాగస్వాములై జీవించండి. భారాన్ని బాధ్యతల్ని సమానంగా వహించండి ఒకరికి మరొకరు దూరం కాకుండ ఒకే స్థానంలో ఉన్న మీ యొక్క చిత్తాలను, హృదయాలను ఏకంచేయగలను.

ఈ క్రింది మంత్రం సామ్యవాదానికి ముఖ్యమైంది. ఈ ఒక్క మంత్రలోనే సామ్యవాద సిద్ధాంతం బీజరూపంగా - మర్రి విత్తనంలో మర్రిచెట్టు యిమిడి ఉన్నట్లు సంపూర్ణంగా యిమిడి ఉంది.

సమానీ ప్రపా సహ వోన్న భాగః
సమానే యోక్త్రె సహ వో యునజ్మి।
సమ్యఞ్చోగ్నిం సపర్య తారా నాభిమివాభితః॥
-అథర్వ.30-30-6

ఈ మంత్రంలో చెప్పబడిన సిద్ధాంతమిది.

సమానీప్రపా - విశ్వంలోని ఓ మానవులారా ! మీ పానీయస్థలం ఒకటిగానే ఉండాలి. అక్కడ నుండి మీరంతా సమానంగా నీళ్ళు త్రాగగలరు.

వః అన్నభాగః - మీరందరు కలిసి అన్నాన్ని ఆరగించండి. అంటే మీ కందరకు ఒకే భోజనశాల ఉండాలి.

'సహ భక్షాః స్యామ్' - అథర్వ. 6-17-1) 'మేమందరం ఒకేచోట భోజనం చేయుడుముగాక' అని మరొకచోట చెప్పబడింది. సత్యార్థ ప్రకాశంలో మహర్షి దయానందులవారు విద్యార్థుల ఆధ్యయన విషయంలో నూరేండ్లకు పూర్వమే యిలా వ్రాశారు.

"విద్యార్థులందరకు ఒకేరకమైన వస్త్రముండవలెను. రాజకుమారులైనను దరిద్రులైనను గురుకులములో వారికిఅన్న పానములు సమానముగా యివ్వవలెను". ఈనాడు నవీన గురుకుల పాఠశాలల్లో దీన్ని అమలు పరుస్తున్నారు కదా?

వః సమానే యాక్త్రేయునజ్మి - మిమ్ముల నందరిని ఒకేకాడికి జోడిస్తున్నాను. అంటే ఒకే ప్రేమపాశంతో స్నేహబంధనంలో ముడి వేస్తున్నాను.

ఇక మంత్రం యొక్క ఉత్తరార్థంలో పరమేశ్వరుని గురించి వేదం ఉపదేశించింది. సమ్యఞ్చోగ్నిం సపర్య తారా నాభిమివాభితః - మీరందరు కలిసి జ్ఞాన స్వరూపుడైన పరమాత్మను ఉపాసించుదురుగాక ! ఏ విధంగానంటే రథచక్రంలోని ఆకులు ఒకేరకంగా ఉన్నట్లు. ఒకేరకంగా తిరుగునట్లు మీరుకూడ ఉండాలి. ఇది వైదిక సామ్యవాదంలోని విశేష లక్షణం.

అయితే వేదం "ఏకంసత్ విప్రాః బహుధావదన్త్యగ్నిం యమం మాతృశ్వాస మాహుః"-(ఋ. 1-164-46) భగవంతు డొక్కడు. జ్ఞానులాయనను అగ్ని, యముడు, మాతరిశ్వుడు,ఇంద్రుడు, మిత్రుడు,వరుణుడు మొ॥ నామాలతో పిలుస్తారు అని ఏకేశ్వరోపాసనను బోధించగా దానికి భిన్నంగా నేడు భారతీయుల్లోను, తదితర దేశవాసుల్లోను అజ్ఞానవశాత్తు - వేద ప్రచారంలోని కారణంగా అనేక దేవతారాధన, అవతారవాదం, మూర్తిపూజ ప్రబలింది. అందుకనే ఈనాడు మానవ సంఘంలో - మత మతాంతరుల్లో పరస్పరం జగడాలు, కొట్లాటలు, యుద్ధాలు, అశాంతి, ద్వేషం, అసూయ, అసహనం, కార్పణ్యాలను మనం చూస్తున్నాం. దీన్ని కూడ మనం గుర్తించాలి.

సామ్యవాదాన్ని ప్రతిపాదించే ఇంకా కొన్ని

మంత్రాలనిట చూడండి.

సం గచ్ఛధ్వం సం వదధ్వం సంవో మనాంసి జానతామ్ । దేవాభాగం యథాపూర్వే సంజానానా ఉపాసతే ॥ -ఋ.10-191-2

ఓ మానవులారా! మీరంతా కలిసి మెలిసి నడవండి. పరస్పర కలిసి మెలిసి ప్రేమతో మాట్లాడుకోండి. మీ అందరి మనస్సులు ఒకటిగా ఉండాలి. మీ కంటె పూర్వపు పండితులు - ఆత్మజ్ఞానులు ఏ విధంగా తమ కర్తవ్యాలను చక్కగా పాలించుతూ వచ్చారోమీరుకూడ మీ కర్తవ్యాలను చక్కగా పాలించండి.

సమానో మన్త్రః సమితిః సమానీ సమానం మనః సహచిత్తమేషామ్ ।
సమానం మంత్ర మభిమంత్రయేవః సమానేన వో హవిషా జుహోమి ॥ -ఋ.10-191-3

మీ అందరి మంత్రములు - ఆలోచనలు ఒకేరకంగా ఉండాలి. మీ అందరికి సమితిః సమానీ - ఒకే సభ ఉండాలి. మీ మనస్సు భేదాభిప్రాయం లేని దగునుగాక ! భిన్నాభిప్రాయం గల వీరిచిత్తం కూడ పలువురతో ఏకీభవించునుగాక ! పరమేశ్వరుడనైన నేను మీ అందరకు ఒకే మంత్రాన్ని అంటే వేదజ్ఞానాన్ని అభిమంత్రించు తున్నాను. మీ అందరకు అన్నాదిభోజ్య పదార్థాలను హెచ్చుతగ్గులు లేక సమంగా యిస్తున్నాను.

సమానీవ ఆకూతిః సమానా హృదయానివః ।
సమాన మస్తువోమనో యథావః సుసహాసతి ।

-ఋ. 10-194-4

మీ అందరి ఆకూతిః - ధ్యేయం - లక్ష్యం (ఆధ్యాత్మిక, సాంఘిక, ఆర్థిక లక్ష్యం) ఒకటిగా ఉండాలి. మా హృదయాలన్నీ పరస్పరం ప్రేమ కలిగి ఒకటిగా ఉండాలి. మీ మనస్సు - సంకల్పములు, ఆలోచనలు ఒకటిగా ఉండుగాక ! మీ అందరి కార్యాలు చక్కగా నిర్వహింపబడుగాక !

సమానో అధ్వాప్రవతామ మనుష్యదే ॥

-ఋ. 2-13-2

నడిచే వారందరికి మార్గము మీద సమానమైన అధికారం ఉంది. కాని మధ్యకాలంలో వేదం చెప్పిన దానికి భిన్నంగా అస్పృశ్యతను పాటించి కొందరిని గ్రామ వీధుల్లో నడవడానికి వీల్లేదని ఆంక్షలు పెట్టిన రోజులు కూడ ఉన్నాయి. ఎంతటి అజ్ఞానం!

పుమాన్ పుమాంసం పరిపాతు విశ్వతః ॥

-యజు. 29-51

మానవుడు తనతోటి మానవుని అన్ని విధాల రక్షిస్తుండాలి. అన్నది వేదం. అంటే సామ్యవాదంలో హింసకు తావుండరాదు. కాని సామ్యవాదాన్ని - సోషలిజాన్ని అమలు పెడుతున్నా యనుకున్న రష్యా, చైనా, వియత్నాం మొ॥ దేశాలు కూడ అప్పుడప్పుడు పరస్పరం ప్రత్యక్షంగానో, పరోక్షంగానో హింసకు - యుద్ధానికి తలపడిన ఘటనలు మనం చూస్తాం !

వైదిక సామ్యవాదంలో యింకొక విశేషం చూడండి.

"నమో జ్యేష్ఠాయ చ కనిష్ఠాయ చ
నమః పూర్వజాయ చాపరజాయ చ
నమో మధ్యమాయ చాపగల్భాయ చ
నమో జఘన్యాయ చ బుధ్న్యాయ చ ॥

-యజు. 16-32

వయస్సులో, శక్తిలో పెద్దవారైనా చిన్నవారైనా, గౌరవంలో పెద్దవారైనా చిన్నవారైనా, ముందు జన్మించినా తరువాత జన్మించినా మధ్యలో జన్మించినా, ఉత్తమ కర్మలు - గొప్ప కార్యాలు చేసేవారైనా, అల్పకర్మలు చేసేవారైనా, ఉన్నత పదవుల్లో ఉన్నా, చిన్న పదవుల్లో ఉన్నా అందరికి యథాయోగ్యమైన ఆదరం, సత్కారం, పదవి లభించుగాక ! అన్నది వేదం. ఇంతకంటె నవీనుల సామ్యవాదంలో విశేషమేమున్నది చెప్పండి.

అయితే ప్రపంచంలోని మానవులందరిని సమానులుగా చేయాలని, నవీన సామ్యవాదులు ప్రయత్నిస్తున్నారు. కాని ఇది జరుగని పని, అసంభవమని వేదం ఘోషించి చెబుతున్నది చూడండి.

అక్షణ్వన్తః కర్ణవంతః సఖాయో
మనో జవేష్వసమా బభూవుః ।
ఆదఘ్నాస ఉపకక్షాస ఉత్వేహ్రదాఇవ
స్నాత్వా ఉత్వే దదృశ్రే॥

-ఋ. 10-71-7

భూలోకంలో అనేక జలాశయాలున్నాయి. కొన్ని చాల తక్కువ లోతుగా ఉంటాయి. భుజం లోతు గలవి కొన్ని, ఇంకా చాల లోతు గలవి కొన్ని ఉంటాయి. అలాగే మానవులందరికి నేత్రాలు, కర్ణాలు (చెవులు) సమానంగానే ఉన్నప్పటికి, విద్యను కూడ సమానంగానే బోధించుతున్నప్పటికి, వారి మానసిక భావాలు ఒకేరకంగా ఉండవు. వారికి గల బుద్ధులలో తేడాలున్నందువల్ల - మానసిక పరిస్థితుల్లోను భేదాలున్నాయి. ఈ బుద్ధిభేదాన్ని తొలగించడం కుదరని పని. ఆకాశంలో ఎగరడానికి దోమకెంత స్వాతంత్రముందో, అంతే స్వాతంత్ర్యం గరుడపక్షికున్నది. అయితే దోమ గరుడపక్షితో సమానంగా ఎగురజాలదు గదా !

ధనాన్నంతటిని సమానంగా అందరికి పంచిపెట్టాలని నేటి సామ్యవాదులంటారు. ధనికుల ధనాన్ని దోచి, బీదలకుపంచాలని వారు కోరుతారు. కాని యి సరియైన పద్ధతికాదు. నావద్ద పదిరూపాయలున్నాయి, వాటిని ఎవరైనా బలవంతంగా లాగుకుంటే నాకు చాల దుఃఖం కలుగుతుంది కాని నేనే స్వేచ్ఛగా ఆ పదిరపాయలు ఎవరికైనా యిస్తే నాకది సంతోషాన్నిస్తుంది. అందుచేత మిక్కుటంగా ధనసంపదలు కలవారు చోరులుగాని, నక్సలైట్లుగాని, ప్రభుత్వంగాని బలవంతంగా ఆ ధనాన్ని తమవద్దనుండి లాగుకొనకముందే స్వచ్ఛందంగా పేదసాదలకు, సంఘశ్రేయస్సుకు వినియోగించితే తద్వారా వారికి మనశ్శాంతి దేశప్రజలకు శ్రేయస్సు కలుగుతుంది. అందరూ పంచుకొని తినుమని వేదం ఆదేశించుతున్నది - చూడండి.

మోఘమన్నం విందతే అప్రచేతాః
సత్యం బ్రవీమి వధ ఇత్స తస్య ।
నార్యమణం పుష్యతినో సఖాయం
కేవలాఘో భవతి కేవలాదీ ॥

-ఋ 10-117-6

భగవన్మార్గమునగాని - వేదధర్మ ప్రచారమునగాని, రాష్ట్రీయ కార్యకలాపాలకు [illegible]

మిత్రులకుగాని ఖర్చు పెట్టకపోతే మానవుడు సంపాదించిన ధనం వ్యర్థమైపోతుంది. కేవలం తన ఉదరపోషణకు ఖర్చు పెట్టేవాడు అన్నాన్ని తినడం లేదు, పాపాన్నే తింటున్నాడు. ఆ ధనం, అన్నం అతని మృత్యువునకే కారణమవు తున్నది. ఇందులో సందేహమేమీలేదు అన్నది వేదం.

మను ధర్మశాస్త్రంలో ఈ విధంగా సూచింపబడింది.

విఘసాశీ భవేన్నిత్యం నిత్యంవామృతభోజనః
విఘసో భుక్తశేషంతుయజ్ఞశేషం తథామృతమ్॥

-మను. 3-285

మానవుడు విఘస భోజనమైన చేయాలి లేదా అమృత భోజనమైనా చేయాలి. బ్రహ్మజ్ఞానులు మొ॥ అతిథులు భోజనం చేసిన పిమ్మట మిగిలిన అన్నం తినడం విఘస భోజన మనబడుతుంది. అమృత భోజనమంటే యజ్ఞశేషం భుజించడం. యజ్ఞశేషమంటే - యజ్ఞానంతరం అందరికి పెట్టి తాను భుజించడం.

నిత్యం గృహస్థు లాచరించవలసినవి పంచమహాయజ్ఞాలున్నాయి. అవి బ్రహ్మయజ్ఞం, దైవయజ్ఞం, అతిథియజ్ఞం, పితృయజ్ఞం, బలివైశ్వదేవ యజ్ఞం, నిత్యం ఉదయ సాయం సంధ్యలలో భగవంతుని ఉపాసించడం బ్రహ్మయజ్ఞ మనబడుతుంది. పృథివి, జలము, వాయువులను సంస్కరించడం కోసం. శుద్ధం చేయడంకోసం అగ్నిలో ఓషధులు, నెయ్యి కర్పూరం, కొబ్బరి మొ॥ ద్రవ్యాలను వేసి యజ్ఞం చెయ్యడం దైవయజ్ఞ మనబడుతుంది. ఈ దైవ యజ్ఞం వలన వాతావరణ కాలుష్యం హరించబడి ప్రాణి సముదాయానికి ఆరోగ్యం చేకూరుతుంది. వేళకు వచ్చిన అతిథులకు అన్నాదుల నిడడం అతిథ యజ్ఞమన బడుతుంది ఇంటిలోని తల్లి, తండ్రి, తాత మొ॥ వృద్ధులకు అన్నం పెట్టి రక్షించడం పితృయజ్ఞమవుతుంది. పెంపుడు జంతువులు - ఆవు, గేదె, కుక్క పిల్లి మొ॥ వాటికి, కాకి మొ॥ పక్షులకు, తగిన ఆహారానివ్వడం బలివైశ్వదేవయజ్ఞ మనబడుతుంది. ఈ అయిదు యజ్ఞాల్లో ఒక్క బ్రహ్మయజ్ఞంలో తప్ప మిగిలిన నాలుగు యజ్ఞాల ద్వారా గృహస్థుడు తన పదార్థాలను సంఘ శ్రేయస్సుకు పశుపక్ష్యాదుల శ్రేయస్సుకు వినియోగిస్తాడు. ఈ అయిదు యజ్ఞాలు చేసిన అనంతరం తాను భుజించుతాడు గృహస్థుడు. జయ్ఞశేషం భుజించడమంటే అర్థం యిది. ఇది వైదిక సామ్యవాదంలోని విశిష్టత.

బలివైశ్వ దేవమును చేయకుండ భోజనంచేసేవాడుగోమాంసాన్ని భక్షించి నట్లవుతుందని మహర్షి దయానందులవారు వ్రాశారు. స్వయంగా దయానందులు రోజూ తాను భోజనం చేయడానికి ముందు ఒక రొట్టెను నదిలోని జలచరాలకు, ఒక రొట్టెను కుక్కలు, కాకులు మొ॥ వాటికి ఆహారంగా వేసే వాడని ఆయన జీవిత చరిత్రలో వ్రాసి ఉంది. మానవులకేకాదు పశు, పక్షి, క్రిమి, కీటకాదులకు కూడా ఆహారాన్నివ్వాలని వైదిక సామ్యవాదం తెలుపుతుంది.

భారతదేశంలో ఉండిన పూర్వపు రాజులుగాని, మహారాజులుగాని తమ ప్రజల విషయంలో చాల శ్రద్ధ చూపించేవారు. శ్రీరామచంద్రుడు అరణ్య వాసానికేగినపుడు, ఆయనను వెనుకకు తీసికొని రావడానికి భరతుడు చిత్ర కూటానికి వెళతాడు. కుశల ప్రశ్నలైన తరువాత భరతుణ్ణి రామచంద్రుడిలా ప్రశ్నిస్తాడు.

కచ్చిత్స్వాదు కృతం భోజ్యం ఏకోనాశ్నాసి రాఘవ।
కచ్చిదాశం సమానేభ్యో మిత్రేభ్యః సంప్రయచ్ఛసి॥

-వా.రా.అయోధ్య100-75

ఓ భరతుడా ! స్వాదిష్ట భోజనం - (అత్యంత మధురమైన భోజనం) నీవొక్కడవు మాత్రమే చేస్తున్నావా ? భోజనం చేసేముందు మిత్రులుంటే వారిని కూడ కలుపుకొని భోజనం చేస్తున్నావు కదా ? అంటాడు రాముడు.

మనకు మన సంపద మీద ఎంత అధికారముందో భాగవతంలో ఒకచోట చెప్పబడింది.

యావద్ భ్రియేత్ జఠరం తావత్ స్వత్వంహి దేహినామ్। అధికం యోభిమన్యేత సస్తేనో దండమర్హతి॥ -శ్రీమద్ భాగవతం 7-14-8

మానవుని ఉదరానికి ఎంత ప్రసాదం కావాలో అంతవరకే అతనికి అధికారముంది అంతకుమించిన దానియందు అధికారం కావాలనుకునేవాడు చోరుడనబడతాడు. ప్రభుత్వం అతనిని దండించాలి అన్నది భాగవతం.

ఈ వైదిక సామ్యవాదంలో ఎంతటిఉదాత్త మహత్వ భావనలున్నాయో ఇప్పుడు మీరు గమనించారు. ఇక నవీన సామ్యవాదానికి సంబంధించిన కొందరు పాశ్చాత్యులు, భారతీయులు వెలువరించిన అభిప్రాయాలను స్థాలీపులకంగా యిట ఉదాహరిస్తాను.

సామ్యవాదాన్ని (Socialism ను) 'ది రాండమ్ హౌస్ డిక్షనరి' యిలా విశ్వవించింది.

1. "Socialism = A theory or system of social organisation that advocates the ownership and control of industry, capital, land etc., by the community as a whole".

"దేశంలోని మొత్తం పరిశ్రమలు, పెట్టుబడి, భూమి మొ॥వి ప్రభుత్వ పరమై దాని అధీనంలో ఉండాలని ప్రతిపాదించే ఒక సిద్ధాంతం లేక సాంఘిక వ్యవస్థ సోషలిజం - సామ్యవాద మనబడుతుంది.

2) " Socialism is like a hat which has lost its shape because every body wear it" - C.E.M. Jood.

సామ్యవాదం ఒక టోపి లాంటిది దాన్ని ప్రతివాడు - ప్రతి సిద్ధాంత కర్త ధరించడం చేత అది తన పూర్వరూపాన్ని కోల్పయింది - సి.ఇ.యమ్. జోడ్

3. "The Proletarians have nothing to lose but their chains. They have a world to win. Working men of all countries unite" - Kari Marx & Engels.

అట్టడుగున పడియున్న అభాగ్యులకు పోయేదేమిలేదు వారి శృంకలాలు (సంకేళ్ళ

ళ్ళ తప్ప ! వారు జయించవలసిన ప్రపంచం ఒకటుంది. సమస్త దేశపు కార్మికులారా ఏకంకండి" - కారల్ మార్క్స్, ఏంగెల్స్

4. "(Communism) has never come to power in a country that was not disrupted by war or internal corruption or both" - John F. Kennedy.

"యుద్ధం ద్వారా ఒక దేశాన్ని విచ్ఛిన్నం చెయ్యడంగాని, అక్కడ అంతర్గత కలహాలు రేపిగాని లేక రెండు విధాలుగాగాని ఆయా దేశాల్లో కమ్యూనిజం అధికారంలోకి వచ్చింది తప్ప మరోలా రాలేదు" - జాన్ యఫ్. కెన్నెడి.

5. "I am for Socialism because I am for humanity" - Eugene V. Debs.

"నేను మానవత్వాన్ని కాంక్షిస్తాను గనుక సామ్యవాదాన్ని అంగీకరిస్తాను" - ఈజనే వి. డేబ్స్

6. "Socialism is.... not only a way of life, but a certain scientific approach to social and economic problems" - Jawaharlal Nehru.

"సామ్యవాదం ఒక జీవన విధానమేకాక అది సాంఘిక అది సాంఘిక ఆర్థిక సమస్యలను పరిష్కరించే ఒక శాస్త్రీయ పంథా కూడ అవుతుంది". - జవహర్‌లాల్ నెహ్రూ.

7. Political liberty without economic equality is myth" - Laski.

ఆర్థిక సమానత్వం లేని రాజకీయ స్వాతంత్ర్యం ఒక కల్పిత కథ లాంటిది - లాస్కీ

8. "The anatomy of civil society is to be sought in its economics " - K.Marx.

"ఒక ప్రజా సంస్థలోని బాగోగుల్ని ఆ సంస్థ యందలి ఆర్థిక స్థితగతుల ననుసరించి పరిశీలించవలసి యుంటుంది" - కారల్ మార్క్స్

9. "Property is theft" - Pierre - Joseph proudhon.

అతి సంపద దొంగతనమే" - పియరీ-జోసఫ్ ప్రవుధాన్

10. "Property is organised robbery" - George Bernard Shaw.

అతి సంపద క్రమబద్ధంగా చేసిన దోపిడి" - జార్జి బెర్నార్డ్‌షా.

11. "Any man who is not something of a socialist before he is forty has no heart. Any man who is still a socialist after he is forty has no head" - Wendell L. Willkie.

ఏ మనిషైనా నలభై సంవత్సరాల వయస్సులోపల ఏదో ఒకరకంగా సామ్యవాది కాకపోతే అతనికి హృదయం లేదంటాను. ఎవడైనా నలభై సం॥ల వయస్సు తరువాత కూడ సామ్యవాదిగా ఉంటే అతనికి తల (ఆలోచన) లేదంటాను" - వెండల్ యల్. విల్‌కి

12. "I am a socialist not because I think it is a perfect system but half a loaf is better than no bread" - Swami Vivekananda.

"నేను సోషలిస్ట్‌నని చెప్పడంలో నా ఉద్దేశ్య (నవీన) సామ్యవాదం ఏ దోషమూ లేని స్వచ్ఛమైన వ్యవస్థ అనికాదు. అసలు ఆహారం లేకుండ ఉండడం కంటె, సగం ఆహారం లభించడమైనా మంచిదేకదా అని". - స్వామి వివేకానంద.

పై ఉదాహరణలవలన వైదిక సామ్యవాదానికి, నవీనుల సామ్యవాదానికి గల తేడాను పాఠకులు గుర్తించగలరు. సర్వేజనాః సుఖినోభవన్తు !

स्वामी अग्निवेश ने कहा

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन आयोजित होगा

- हरिद्वार में छह से आठ जुलाई तक होगा गुरुकुल सम्मेलन
- निजी स्कूलों के नाम पर देश में शिक्षा उद्योग खुले

हरिभूमि न्यूज ▸▸। जींद

पत्रकारों से बातचीत करते हुए स्वामी अग्निवेश। फोटो:हरिभूमि

बंधवा मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीयध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भाजपा सरकार को देश की सत्ता संभाले हुए चार साल हो गए हैं लेकिन अबतक भी सरकार द्वारा शिक्षा नीति लागू नहीं की गई है। यह सरकार की सबसे बड़ी गलती है और इसी गलती का फायदा उठा कर देश तथा प्रदेश में निजी स्कूलों के नाम पर शिक्षा उद्योग खुल गए हैं। अब समय आ गया है जब देश में वेद आधारित शिक्षा हो और इसी को लेकर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में छह से आठ जुलाई तक अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन के माध्यम से देश में शिक्षा बदलाव की एक लहर की शुरूआत होगी।

स्वामी अग्निवेश सोमवार को एक निजी होटल में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में अलग तरह का भ्रष्टाचार था। उस समय टूजी और थ्रीजी जैसे घोटाले होते थे लेकिन वर्तमान भाजपा सरकार में यह भ्रष्टाचार कई सौ गुणा आगे बढ़ गया है। अब बड़े-बड़े उद्योगपति देश का अरबों रुपया लेकर आसानी से फरार हो जा रहे हैं और सरकार कुछ नहीं कर रही है।

Date : 03.07.2018

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-07-2018 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/
93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: Vithal Rao, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax : 040-24557946
Request to donate Rs. 250/- సంపాదకులు -విఠల్ రావు, మంత్రి సభ

To,

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से समता पॉवर प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.